

वाजाए वक्तु धर्मि सौमन्त्रि नीतिगिवापिनः सर्वता को सुवृत्तौ एव वक्तु धर्म साधिनः ॥ माहृत्क श्रि दुवा वा वा भक्ति यु के न जडाउ
 धायः गेना सो सर्वमागाः मागा गरो नगा गेः वातक स्य जडा से पा जय ग ॥ एव ध्व संसा या वाजा धया पि निमन्त्रि धया पि नि। नीति च स
 या ना सो पि नी दया सो करुत सा सुद्वरु या रि गु व्या पा ज या या। धर्म सैरु सा सो ठः मा। ग्व व अ सं आ क जनः इत्य च न्द्रा य पिं सु म रू य
 मा। गग कि पु मान जं डाउ धाय या य मा य। हे अय य मा ना ध क ना म रू सो प्र दि दि अ जि सं पूर् न ग ग ध न मा गा क मा म या र्ग र्ग नः
 पि ना ग। दि दि अ जि म सा य ग ना वितः क न ह रु सः ध वा य क या जी व शा न व्या कंः क न ह रु स म त्वू या ध कः ध नी या नि मि डि जि
 स्पे नं ज डा या य मा त ॥ ग ग ४ अ हा इ ध यी क मा यं भो आ चू दाम नि धाय य ॥ धू ग धो हा य र ध्व ग धः ज त्व रू ण म नी इ प्र ॥ दि य सु व
 लू ज त्व श्री मन्त्रि गं सम आ च ग वहि श्र यो चा पि का पि त स्य सम न ग ॥ धू प्र कू मा य अ के न वा न ग क दि य सु व रू ज त्व या ग ज रा

तसाजाकथमानेपिहाभवाथमकूमात्रपाशुगेजपोचात्रधयाशुभेगसःकापितनगवसथगेवैभनं॥श्रीसमृद्धिपुसत्रानि
वहवृक्षगुसर्वग४७वगदामहानन्दसूत्वधर्मगन्धर्गः।सर्वसत्तमभाद्रादिमहासाहपुवर्द्धग॥धययाकमनंश्रीसातनं
पुसन्नरुशुसकएनचकनाभिशुवचनरुतवत्रस्यात्रसमहाभानन्दरुयासूत्वधर्मधूशुपकापत्रकरुन्याभसंसात्रयोकस
कस्याभिमगत्रुयामहाउत्साहरुयाभचोन॥७गगत्रुनसंपूर्णकूमात्रपयिवर्जितसकेग॥विदभजार्जुनदर्शनार्॥उगु
वषगत्रुनसेरुकेपूर्णेरुयाचोभजा।उकूमात्रजागात्रगेगुडिजिस्थनमरुथधिमकूमात्रजामयना॥७गगकूमात्रकाद
भागमहापागकपिणयए।नृपगिवचनेपयिवर्जितनमहाधर्म॥किंकात्रनसर्वत्रुनसंनसंपूर्ण॥७गत्यकात्रेन
महागुपकूम॥धुप्रियानिगिथवाजकूमात्रगागजामहापागकरुगुधूमनृपगिगागायागुहकमभात्रगेमधूगागान

महाधर्ममेवायु चक्रावलीयानिगिधा साः सकवयज्जलसंरुकरुयाचायानिगि धृगुप्रकावेकमापययानिगि डि जिस्वनया यमा
च ॥ गग ॥ सुधर्मी वगि वातत्व ॥ द्विगिय के वर्क स्थाने गमनयन महागु फयग ॥ उगु वषगु सुधर्मी वगि ना नीमः जाउक
मातग विदे सजागनं रभे वसुं मद्रु धनिम के वर्क व्याधया उ स वा नाय नाग महागु फया नाग ॥ उग हि जं के वर्क स्प
पति पूगी जन्म जाजा स्थाने हृष्टा ॥ धृष्टु दिदि अजिमाः मंकि निम सिया समधान यागर के वर्क व्याधया पति धया प्रक ना
प्रायमवा जाजा या धनः स यना के ने ॥ उवमस्तु सुधर्मी वगि पूगी जन्म निश्चयः मंकि अपयमा ना संवाद यन हृष्टा ॥ धृगु
युकाय मंकि ने विगियाग ॥ गध विगियाग ना धा सा ॥ हे महा नाज सुधर्मी वगि ना निया केः जन्म रुण मः पूगि धा निश्चय धा ज
आग ॥ जिगु वचन स अ स ए जाक जे च ॥ दिदि अजिमा उ प्रहि गगे समधान नयाना ॥ जाजा याग के ने ॥ गग ॥ नाज हृष्टा अस
ए प्र प्र अहि ग वचन से वी र्काः मम पूया हि गन ए विष्वा गि ॥ उगु वषगु जाजा ना सायाः अस ए यानाः ध पूया हि ग अय

एषा याना जाजानेधन। धनपि। जिपूआहिगं॥ मत्वधकधाज॥ ॐ गिगनदिगं गुत्वाः पूआहिगं साक संगापय॥ ॥ यथधकधा
गुत्वठनाः पूआहिगन साक संगापकया धनाकया चान॥ गग॥ ॐ माज केवर्ह सागृह नाजय। कुभनगुपुपुपुपूर्वच नुपुमा
र्षसर्वसिद्धि॥ ॐ गुवषगु धनकवितकूमातरुतसो केवर्ह व्याध्याकुस वासयाना के धंध गुपुपुपुपूर्वच नुपुमा ध
ग्रामानंरुपा सकलसिद्धरुत॥ कुभनवाधिसंम्राजसर्वसास्तुनिगिविद्यापूयैराजया कुमापूर्वजन्मकृयाकर्मसर्वसिद्धि
विद्याजायग॥ कथं धंध वाधिसंम्राजं पूअरुपा सकलसास्तुदयानिगिसंतु कनाविद्या॥ ॐ धंध गुपुपुपुपूर्वजन्मया कृया
कर्मयानागुसकलसिद्धिविद्यातिहांगेधेरुत॥ नागिसमयंदीपगे धधिउगत्युकात्रवर्षरंघये॥ गथनाधसा नागिसम
यमगगधेरुतः॥ ॐ सगधेरुतगे धंध गुपुपुपुकाजंगेजदयागुत्रिचिकायह॥ ॐ गदिनः सर्वलोकं पयिचिक्तयः कविक
मातेनामपुण्याकथ॥ ॐ कृयादिन्यः दयाचाकलाकपनिस्यनंमनंराजपपगधसा धधकवितकूमालयानाधधकलाकपंचनं

सकस्यनेधाव॥ गगनकुमावदेआकजपृथिमार्गकीजानगजकृगपुषभयग॥ उगुवषगुधूमकविनकूमावनेः देसरधमरपृथि
मार्गसक्रिजानमिगाभतत धूगुधानससोन॥ गगनगयेवाजगृहं हसि अग्धस्त्रानं सलगमनुपदेवगाधनकूठागवः ना
गस्त्रानं सर्वकूर्हि स्थापयत॥ उगुवषगु धूगुनगयः धूगुवावागृह धूगुहनात्वावधुधेधक हनेधधायसलगधदेवगायागुध
नधकूदगयवधुगिर्धधक धूगुपुकासेधनगतस धासरनामकूनागविष्मगसपूर्वदुर्हिदयाचोक धापनयानाचोन॥
चपूननृपगिमकिपूजाहिगं सर्वसेन्यपुमृत्वरावयकल्याना॥ संग्रामनिमिर्ह हसि अग्धयधपूजयगः कूमाववचर्नश्रुत्यास
वृत्ताकासमृपासृष्टरुचंकृजपयायन॥ हनधूमनृपगिधवाजामंकिधपूजाहिगधसिपाहिपुर्जागवर्दावधकलावनाकल्प
नायानाचोनकूपाणिगिधसाः संग्रामयायनिमिर्हिनं हसि अग्धयधदयकागः कवितकूमावयागुवचर्नठनासकतलोक
दयाचोक कूमावयागुगान्यधनकजतंसकतमूनाकूदायानाभिगत॥ गगनसूत्रेनगमननेमिर्हिपूजाहिगनह॥ द्वाः
सनचिकयत॥ उगुवषगुसूत्रेनंरसागमनयानावकुनमपूजाहिगं धवाजकूमावत्यनंमननंरावयव॥ अक्षआ

अथ मम नगरा ॥ क संकाय नुक द्विगिय वर्ष मम चिगुष्टं नगवपुस्कानय ॥ अक्ष आश्वर्याध नक्षत्रिगुलारा जिनंरुसा
इशरदप्रिनिद दगः जिगु चिर्दगुष्टया ना देश दस्थनक पुस्कानरुयागु गादगु ॥ गगु ४ नृपगिदू ४ दवन देश नक जग मने
वाज्र ननकू मावट्ट ॥ अथ वग्धं सूधर्मा वगि कू मा जे सर्व जगु लपूर्णः मो भौ कूणम निग्ध रिगं ॥ उगु ववगु वाजायाः इषने
देश गत ॥ हिगु हि वाशया ॥ पूरा हि गनः धृष्ट कय कू मावट्ट न धात्रः निग्ध यनः सूधर्मा वगि वा निपा गरं नः जन्मरुम ॥ क
विज कू मावधः स कय जगु लसंश कूश या चीन न ॥ वत्त कूणम निदू नः गेज पुका स रम ॥ नगत्यु मा नृप विचिक पुमा दि
ग ४ सरुसा समूपां स एव कू गा जे लि पू गा मूनाः पूरा हि ग संप स नै व म बु वीग ॥ धृगु पुमा लः धृ पूरा हि गः सिय काः ह
धर्मान यागः गत्काय नं कू विज कू मा लयाः धा स थन क त ग नः धृ वा ज न वि हो ग याः वाजा या धा स वि गि यागः गस्थ वि
गि याग या धा साः रुधर्मान या नाः कू गे न्य थन क ग नाः वा हा ग नि पा हा श ज त याः धृगु पुका जे वि गि याग ॥ ह वा ज
नेः हे म हा वा जः अप वा धि कू मा द या ची क टवः वन यागुः वि नि याग ॥ गग ४ सूधर्मा गि ह न कू मा जः वा जं वा द्र सर्व स

५

मागगा ४०० हम्हद्विक ४ श्रीमात्रास्त्रीपेधागुकेष्वपि। जल्लोदाम्निधिये ॥ इमहायजः कृत्वा तं विवेकयारुथ ॥ गगु ४
उगु वषगैः सुधम्मि वनीया वषा गजरनेः कवित्रुमात्राजगैः जघ्ण दया वाकनेः पूर्नरुणप्र थथिगु पुकायया पया
कुसः गेजरूपः स्वर्गमध्या पागायसः सुयामद् कृष्णात जल्लोदाम्निद्रुम ॥ ०० गिसंप्राथिग गार्ह अवस्यं गवित्वान ॥
अपत्रमागायल्ल कृष्णायं जकारव ॥ ॥ नागायाकैः धूपिविगियाग विगियास्येतिः अवस्यं भवंः गवित्वानगः अपत्रमा
गागैः जल्लः नाग कृष्णाय वझारु वनिश्चयन ॥ गग ४ कृष्णायं व्याधि धाने ग्रामसंधि कृष्णकर्म दयगमभनं दृष्ट ॥ ३
वंमस्तु वचनं मम सन्नुपनः चिगुद्र जगमन ४ ॥ उगु वषगैः ध्वनाग कृष्णाय गवज व्याधि यागमया धानसे सधिवृ
णकर्म मिगा रया चीनः जित्वना ॥ आग थउ वात किउ गु रिः साक रयाः चिगुगु मना रया दे शानक जरुया ४ ॥ ०० गि
संप्राथी वा झे नु ४ जल्लान नृप गिसंलगस्य ॥ थथधक धविगियागु त्वठ ना ४ जल्लो तमं न नागा आज्ञा दयकत ॥ गगु

अथ यमागाः वाजिनकुलनिगुस्य ४३ विद्या नवूटय ॥ ५७ वषट् अथ यमागा या ऊँ न्यः वागा नेस्वया गेपिकयाः वा
 लवित ४३ विद्या मक्रियाग न्वाग ॥ साधुगृत्तना आदिकर्तृधायः वाद्यकार्यस्वरूपसमूह मम नमस्कि मूढ्यां विष्णु
 सधग ॥ इमन्ति १४ दस साधुधिया म्रकः ४ वाद्य या माडि ने समूह पाय या चकार्थः वाद्य पाय या क म्रकः ४ स्व
 यः समूह पाय या क म्रकः ४ स्यतिः जिने मूल म्रमन्ति मूढ्यां या नाग या ॥ ५७ तुकाय सूर्ये न निन्द्या कृण कर्म ॥
 धित्वा ॥ का न्य ४३ ट्ग ४३ ग कृटिता पुलाः वाद्य लक्ष्मी न विचाय यग ॥ ५७ यिया निगि जिने सूर्ये न निन्द्या कृण कर्म ॥
 दजयकाः कृण कर्म या ना चो ना थिय रूप थियि गु पु काय या साया ४ कृथं व्यकाट रुग म्रः वाद्य या ल म्रि विचाय म
 या क म्र ४ अथ मिधकः अत्ता म न वाज कृ मा लं वा ल वित ४ ॥ ५७ न व कल्प नाम म म व च न लं घ य ग ॥ अस्मि दिनेः म म
 पा ने सें दे हः मन्ति वृद्धि दृष्ट ॥ ५७ न व या य ग ४ कृ या क म्र जिगु व च न जा ये घ ना या क म्र थ ५ या ग दिनेः जि प्रा
 न सें दे ह रुत क न ग मन्ति या ग वृद्धि ट्व ना ॥ ५७ न ४ इष्टे अथ यमागा ॥ ५७ विद्या कर्म ल म द क वा ल त्वेः ग व ल

गुरुकादयः व्याधायुगीममनदृष्टा ॥ उगुवषगुहृष्टचंद्राय अपयमानः भटविष्माधाय थुगु कर्म या ना जगका
लम् वातम अवत व्याधाय अ स थ ग या जः थ या म या जिग के च रुज ॥ मम मृत्फु स व्या हा स ता स्य प्र वा धि ना ॥ पुन
मन्ति अस्मिदिने ग द्वा पाय सिधु कर्म कूर्चः पूर्व का त सम यः द के न के द यः उका न गु फ न सिद्धं ॥ जि सि ० गुः ल्या ख
या नाः दित मृत् सू ह नं दित आ ने दु नं ची ना ची न ॥ रु र म पि षा ना म मन्ति थ उ या गु दि न सः थ क् मा य दू के गुः न ना र्गः
उ पा यः वितं र या य म गी पू या पूर्व का त वर्ष ग सः तू सि नः के द य ग स्या य म्ः उका न के म नं गः गु फ नं हः या य द्वा ॥
अस्मिदिने सर्व से न्या दि पु का भ य ग ॥ सर्व या द्वा गी स प गि अ धि का यः मन्ति ऊ हः ग वः सर्व मि गुः से न्य सर्व से पूर् ष्ठी धि
का य ॥ थ उ या गु दि न्यः सक त स नि सि पा हि द या ची कः सि के मा यः से पूर् ष्ठी या द्वा गी स प गि न जा या ना ची न म् चः अ
धि का य रू या ची न मन्ति द याः थू पि या नि नि । सक त मि गु सक य स न सि पा हिः वं ध य या ना ची न म् च ॥ सा धू र म पि
व्या नं वि प हि रू जी क रू सा चि र्द अ हि ग ना भः ची य च दू रु कि बु रूः म म पू र्वा मन्ति पु मू र्वा सर्व प्रा ण न ड स्य वा धि ना ॥

धन्यश्च पितृनाम निच्छेदकः विषगि मत्पुत्र लिया कर्म अकर्म या कर्मः धनुर्दिग चित् (अदिगना अया कर्मः) श्री ॥
 काय संगमः एर्कि बुद्ध या कर्मः धधि म् जिशु पूथं या वचनः मनि पुमूवतानाः दया ची कला क सकल्यः शि ॥ सं स
 ना कलखः वा धरु या ची ना ॥ गग ॥ कू मातुं विदार्य नाः समा युर्दी ना धं च धय ॥ उगु वषगुः धधि म् कू माप यागः सिद्ध
 या धः स पिप काय मापः जिशु आ पुर्दी द गयः धवा ध्व वं धया य मात ॥ ०० गि जाजा वचनं शु त्वाः मनि पञ्च धन सिधु
 चगु वग समा वध ॥ धूत्रिः जाजा या गु वचन न्य ना मं नि नं ध सं ना प चा या गः न ना र्णः चतु र्ग व जग याः पिच का वन ॥
 गग ॥ समू पा विग्ध समं निग न धो पि का । कू मापं पुच व के सम न ग ॥ उगु वषगु द या ची क र्मा पिट्वा ना म सं निः का
 जि लार्दी श्रे न्य सि पा दि पुजा सक ज मून का । ध्व क विप कू मात या ग माप ग नः सक र न क्षा रूत ॥ धन या ट्व धू लि ॥
 गग ॥ सू ध र्मा व गि समा चा जः पू गः सर्व वा र्दी स वा द य ॥ म मः पू गः अस्मि दि नः ग व ॥ जी वा त्मा र्ज स याः म म न ट ष्टा
 प्र त्व रू ग म नि पू ग रु सं द दा प य ग ॥ उगु वषगु सू ध र्मा व गि ना नि नं धू गु ट्व सि या गः ध ग पु ग या गः संपू न वा र्दी ट्व

कजाधाय॥ हे एगबंन जिहं काय च ॥ ५३ ॥ यागु दि न्य धुगु धा सजीव यागु आत्मा यागु र्ग सं पद ल कं जिं ट्व भ धू न ॥ हे पू ग ज
त चू ग म नि च न ग ॥ ५४ ॥ या ह सु त ग ज्ञा ना वि त ॥ सा धू गृ नू पू गं न ग तं ॥ ग म व ना क य सू ट्व नं वा भ य ॥ पु ग्धा य न ग
न य ॥ ५५ ॥ सु ध र्मा स्व स्ति मं ग ल व र न ॥ आ भि र्वा द म हं ग व ध न द दा प य ॥ ५६ ॥ ध न्य र सा धू धा या ज्ञ च ॥ ५७ ॥ हे पू ग च र सा
ध धि ग ॥ ५८ ॥ वा स ची न्य मा ज ध का इ ट्व गाय म गे वा भ या ना ची पु सं गा प या ना ग न्य म गे ध दा का य म गे ॥ ध के धा य ॥ सू
ध र्मा या नी नं मि ट्वा नं ट्वा वि धा या हा य का स्व स्ति क ल्या न व च न आ भि र्वा द वि या म हा गु फ या ना धे ला वि या की गं ॥
ग ग ॥ ५९ ॥ चू ग म नि धा यि गे नं दा य क कू मा रं ॥ निर्ज ग्म म ॥ ६० ॥ ग ग ॥ म नि स्त्वा न स्त्वा नो ग ज ग म न ॥ ग ग ॥ इ य व ना क य मं नि
द द्वा ॥ स ए ज ग नृ प गि पू ग नि श्च य ॥ ६१ ॥ उ गु व ष गे धू ज क वि य कू मा ज य त्त चू ग म नि ध य या ना म नि क धि ना ची ज वा
य ष क वि त कू मा त वि स्थ ज न ॥ ६२ ॥ उ गु व ष गे ग्व पि ट्वा म नि न ॥ मा रा मा रा रु या ॥ हि गु हि ता ग्व रु तं मा रा रु यं ॥ उ गु व ष गे
वि स्थ ज न गु ॥ म नि नं ट्व नं स ए ज ग नृ प गि ना ज या पू ग ॥ ६३ ॥ कि ॥ दि व्य रू प ॥ स पु का भ य र म हा गु फ न ॥ निर्ज

ग्रामः॥ गगः॥ स्याम्याज्ञा गयी यसीः कूमाजं वध निमिर्न। सेन्य संवाद यग॥ कानध सायत्त वृज मनि। गजपिक याभः गुफ
आना विस्मय नः उगु वषणु महा याजाया आहा गगधन्य थूझ कवि यकूमाय र ग या य निमिगिर्न सिपा हियागः अध
य याग ॥ गगः॥ कूमाय ग्रासनः मृग निर्ज गमः त्वयि गं त्वयि गं। संपक नाग वास स्थानं पुस्य गः॥ उगु वषणु थूझ कवि
यकूमाय ज्ञानाभ च या या वेग थया थः वा आ वा आभ नः। अस्य तिवना क ज स चै पक नाग या जा या द ह न स का वा गं॥ स
वृसेन्य पृष्ट २ त्वयि गं २ गस्तु अस्तु पुता भ नः हा हा कायः स दृ न र ज गः॥ संपूर्ण सनि सिपा हि लोक सकल वी ना वी नाः
अस्तु २ अस्तु कय का ह ज हा हा काय ता य वृ या स दृ या ना वि ना ह ज ॥ गगः॥ नाग वास स्थानं पुस्य गः सेन्य नः नट द्वाः स
वस्थानं निम्ब यग॥ कू गग ग कू य स्मि गः निर्लूयः मक्रियत्त न नट द्वाः पग क वा य पूरूष सामुद्रिः नय पा द चिद्र पुष्प
संपूर्ण॥ कूमायः पद क वा य पूरूषं पुच ज के सम न ग ॥ उगु वषणु नाग या जा या स्था भ थूझ कवि यकूमायः का वा स
घनाः सिपा हि मत्व नाभ स क र ल मात र त रू या न ॥ गन भ न ग व ची न ध क धा य निर्लूय या य मरू। मं नि पी स र्ग माय
जान र भ म यू या भ मत्व नाभः पग क ना म वि भ काय स ग भः अध यागः म नू र या गु मि पा वि द्वा च नं य ऊ न सि ग भ क

धृष्ट्यायाः धृष्टविजयकूमायत्तयकूमायधृष्टमनेनंधारधनयि। पदकनामपूषनेकविजयकूमायंमायय॥१॥ लयकेम
रुयाभासाकूयातिहोत॥१॥ धनयात्तधृष्टि॥ गगनेसमूपासिनदिव्ययूपमहत्पुतं। सोम्ययूपं सूर्यप्रांतिदिव्यात्तका
ययमनुगं॥१॥ महच्छीखोजमलिसंयुक्तं। यत्तधृष्टिगं। पञ्चकचम्यकनागनाजस्यः गिष्टकविस्मयाचिगं॥१॥ उगुवष
गुः धृष्टकविजयकूमायत्तवनाः दिव्ययूपयाचीकः महागैजइमः पूषच्छृष्टगुः स्वयगुययापूः महाकल्यानया
नयाजसंः ज्ञानगिस्तानं गियाथं वाननाकः पूषच्छृष्टगुत्तवनाः महागुताजाकः जत्तयागुचीगमनिद्र
कः धृष्टगैजइमः ज्ञानवनाः चपकनागनाजायामनसः जगद्गुरुयाचीन॥१॥ गगच्छृष्टमायः ममस्त्वनभजर्ज
जायागैः गवच्छृष्टमायंममनचित्तं वीधयः नः ग्राभनेः सूर्यनं वासयाः नागनाजनेकूमात्तं वीधयत्॥१॥ उगुवषगुः
धृष्टकवितकूमायः जिगुधानेसजलअस्येयिः धृष्टधामच्छृष्टवनाः जिगुचित्तं वीधयत्तः चनज्ञायमगैः जिगुध
ससूषनेवासयाः नागनाजनेकविजयकूमाययागहृष्टाविद्यागव॥१॥ गगच्छृष्टगमलिमहत्पुतं जलस्तुक्कूमायं
पदज्ञानसामूदिक॥१॥ गैस्तुगः विवाचयत्॥१॥ कूमायं निश्चयनागस्तुनः पुविभनेवित्ताकयन॥१॥ उगुवषगुः

पतञ्जलिमनियोगः गजप्रः धृक्मातृहृन्संकीर्वागनिश्चयत्वजः पगकसामृदिनेः पवाद्याचयाविचायसिजीप्रः
धृक्कृत्वेसकएनमाताविचाययाकप्रः धृक्कविचकृमाननिश्चयमेवचचंपकनागजायास्कानेकीर्वाग
धृक्कः लानपाञ्ज ४॥ गगुस्सहस्रागत्वापदकसामृदस्य सन्निधौ पुनत्वेगत्पुवृत्तौ न निवाद्ययनि विस्तृतं ॥
त्रैविदेदिगमाकं लूगपिष्टानागि विस्मिगं ४ गग ४ सर्वसं न्यं पुदुयग ४ ॥ उगुवषगुसायधियासापिअ
यापवाद्याचयसायामं गियागनमस्काययानावृत्तौ न संकटात्यकनाञ्ज विनियोगः धृक्पगकने विगियागुत्य
न्यनाः रुमपिष्टाः नाममं नि विस्मयचायाचौ न ॥ उगुवषगुसेपूर्व सिधाहिचाकलउताचौ न ॥ नानावाधः
हाहाकातेससं ॥ अहं पुहाययगजावचनं नागजास्य संवाद्येग ॥ इजात्मानागजास्यः महाजास्य अपयि
गः वैपिअहिगदायकवकुउध्वं ॥ नानावाधधनाः ह्रमिकं यमानेथयायवृयाध्वः अगनेदहचसंकयका
थं गस्त ॥ अहं पुहाययाना ॥ जाजायागुवचने सं न्य सिधाहिसकस्यनेधयाचौ न नागजायागः खज्ञानाधयाचौ
ने ॥ हयापिष्टनागजायाः महाजायाया अपवाधका नधया वैपिअहिगयागकृमानयागयजागयचं ४ ॥ चंपक

गत्कायलनेच्छादयेतः ममनवाजकुंठं हृष्टागवठजतम् वगुष सर्वगसिवाग्मपयेत् ॥ गगठजमदम् अदिध
 पथममहयाः पवनुनृपगिकुंठजतस्कृतस्कृतगतवित् ॥ इचपकनागजागाननानेः गोपगाहिमहसाः जिमि
 जागानं गं मे सायीजः चं नगः दहं हं कं गाधूयू अगधूत्व हसकगाने गापूयावियः उगुवर्षगु गुमदयके द
 अदयके दयकावियः जिमिगु हृमिमपूजाजीपगसजागानं जतस्कृतयथाय हृष्टयायगु सामर्थ्य ॥ १० मिगवठ
 सूद्वनः नागीनिस्कानं पगिकुंठपवाथगः आनन्देनवासया अत्रुर्न कूमाजं च्छयिगे ॥ गमासीनेसमाताक
 पापिनस्सविस्मयाः जिमिगु हृयतीगचिगः १० यवकूमाजं सेवादयेत् ॥ थयिचं रुसाः सूद्वनः नागीनिनापची
 नापगिकुंठयानाः चोठुधसा वासयायधसा आमत्रुर्न कूमाजं च्छयिगे ॥ थयधक धना
 जयागहिनक ह्या या पापिपिस्स रुकाधवः ह्यानापकम्पयाः नागजागाया ह्यानाजः अंदावचिर्दयाना जाजक
 मायनापटवज्ञाग ॥ गगठकूमाजनागजागास्काने सूद्वनवासयेत् ॥ गवठनानापुकारं सेवादयेत् कूमाजं मम
 नासमर्थः जाजस्मानं ममनहि ॥ गगस्स रुसागत्या नागजागस्य संनिधौः गत्पु वृद्धीर्दनिधेदयनि

विस्तृतं ॥ उगु वषगु धूक कवित कूमाय नागजाया स्कान संसृत्वं ने धूक कूमाय वासया नाचीन न्न थउ नाग
 जागाने कूमाय याग वूउ य यागः हे कूमाय जिजा या यगु असमर्थ रतः नागजगज वि डि मत्तु झां ॥ उगु वषगु
 कूमाय नागिनी पनिस कथं वृण नाचीना ग धूगु वृणाने त्वसकटां धाय ॥ किं काय न सय पिनातः श्री सम्य गिहय नः
 ग व ॥ गिव हय नः दाय क स्य चं प क स्कानं गय न पु याग ॥ गग ॥ मरु किं वृण मृनि संयुक्ताः कूमाय नाग जाग स्य विव
 डय गि विस्तृतं ॥ हे कूमाय चू काय न धा सा डि गि सकल श्री सं य गि सु धा नं रू पुनः धूगु धा सरू न थूक कूमाय रसा
 नाग जाग या गय न ग ना चीन न्नः उगु वषगु सा रा या क न्न यत्त वृण म नि ड न्न सैरु क र या चीन न्नः धकः कूमाय न नाग
 या के विस्तृतं ॥ वि कि या गे ॥ सा धू गृ लू नाग जाग स्य म म ग म नो ग वः म मे न प य नु द या का यू ल्ध पु स न्न ॥ गग ॥ दा य
 क स्यः या गि स य द ह न स्कान पु स्कान य ग ॥ ध द र सा ध ध या न्न कं कू या नि गि धा सा सक य या उ य य सः क रू न्ना इ न्न ह
 जि ग न्यः धूगु धा सः जि गः पि प ग स द या क यू ल्ध पु स न्न र य मा य ध कः उगु वषगु क वि य कूमाय ना गि या स म य द न
 सकल या न्न द ग या चीन वषगु धा ग याः ग म न या नो ग न ॥ गग ॥ प्रा ग का लेः ली धा य र य स गि गेः वज का व स्कानं

हा

पुविसन्निमहास्ययत् ॥ गगः पदकस्य नागवासस्थानं पुदुयगहृष्टाः कुमाजं पनायके गगादुर्गं ॥ उगुवषगुः नस
नामस्यं त्रिरयमद्भरुसा एयनहृन्नामधूव्यायाउसदुहृन्नासूत्राचानंः उगुवषगुः पदकनामनागवासयाधनक
याः चाकजडाः सात्ररुजः सुसंजिकविजकुमानविस्यजंनं ॥ दाजकस्य पाइकाचिह्नंः सामुंदिकस्य दृष्टाः ॥ वित्तोव्य
गं महाभ्यर्थे सविस्मय एयाकूला ॥ पुगुष्टस्वस्वभक्तातिपजायके गगादुर्गं ॥ कुमाजयागुपात्रीयागुचिह्नं सीयावप
दकसामुंदिकनंः धूव्यायाउसथनधकागत्वनाम ॥ मक्तियाइअन्यधायः रुमक्तिः महाआनंदनविस्यजंनंः महाआ
भ्यर्थे चायाअथमः धपजाट्वाचकेनाअगिविस्मयरुगुसा एयंकजयानाम ॥ धमरुगुगुः अस्तुः अष्टमाना ॥ सकजं व्य
जथयाः जने ॥ गगः पजका वस्थानं पुदुयग ॥ उगुवषगुः धूव्यायाउस ॥ चारविवंधिपयानं ॥ गगः कुमाजदभय
गः पजकाजस्य अगिपृथनदृष्टाः ममस्थानं गजलीआयागः संकेष्टनः पुविसयाः मभनवडाउद्यापनं ॥ ममगहंस
वृक्षेन्यादिवायगः गवः गतवस्तुताजाकजअगियत्तं पजकस्य नदिपाजगमन ॥ उगुवषगुः ध्वकविजकुमासख

स्थितिः धूव्यायामनसः अग्निकवृत्तावायाः सागः जिगुच्छाने अत्र नञमः संकष्टनजिधसुअवः आगजिनं वशायाव
 मावः जिगुच्छावाधसाः संपूर्णसंन्येसिपाहिधिययानावाचनः पूगुधोः जलजिंयायमावः हिजाधवसंहिजाहिउअन्य
 धकाहिजावापाकायाधकविचकूमावगयाअः धूवानेपिहाअनः नदिपातसगावगाकोगं॥ गगोसोः सत्यवगस्यपू
 यः सस्तासयन्विगुच्छाएः पुविसगः कूकालनिवेसन॥ रुचकर्मपुकारुनाः तुकर्मिसमयंविचाययन॥ गगः पजका
 पगुहाः पदकपुविसगनहृहाः सर्वसंन्येः आगगाः पजकावस्छानेकूमायंसून्य॥ उगुवषगुः धमसत्ययर्थनागाया
 पूगुकविचकूमावयागुजलचूगमूनिः गजपुकासुअयानावांरगनाअअः कूक्रावयाउससूवाचाचनः रुचकर्मयायगुः सा
 मर्थदसानैः धधिसमयसायाअः यायमजिअधिकाहावयाअचानं उगुवषगुः धूव्यायाः उसाः पनाट्यावयावउनसू
 अः सामूदिकनं दूहाअनासागः संपूर्णसंन्येसिपाहिसकथेइहाअनः धूव्यायाउसध्वकूमावयूयकेमरुग॥ पद
 कसामूदिकस्यः दावकस्यपाइकाचिद्वरुत्तरंदगुः पिट्यानस्यनिव्यदयमिविस्तनं॥ पुनः पगकावाव॥ ॥००

मिसं प्राथम्याना सोऽपि पितृना। श्रीमहामणिः पगकचापपूज्यमात्मवर्गे यमिमेव वीरः ॥ १ ॥ गुर्वषणुः पदकसामुदिने
रुतसाकविजकुमाययागुः पात्रियागुचिह्नगनखरुं मखनाम्। अगस्त्यगसायागुः शपित्वामंक्रियाके। विस्तारकं। विनि
यागे॥ जिह्मथरुतपायधूना। ध्वकुमायधनं पितृभ्यो न्यधूनकजधक विनियोग ॥ ४ ॥ विनिषास्येपिः धूजगुपिषामं
निने। सकलज्ञानं पूज्यरुम्। सामुदिचापवाजसियाचोम्। ध्वजपाट्यायस्वया आह्लादयकज ॥ १ ॥ गगनसमूपाविग्धं। समं
क्रिजनपोषिकः सामुद्रिचापपूज्यं। यथायथामार्गसमूपाभयन ॥ १ ॥ गगनकूम्भकाजंग्राननं। कुमायदर्गयगुग्मिक
पूज्यासिगुरुविख्यामि ॥ ३ ॥ गुर्वषणुः। दयाचोकः। मंक्रिप्रजासिपाहिनीकनमूनकापगकसिग्मम्। ध्वयस्सस्वया
हिगुहिनावावृणने॥ १ ॥ गुस्सायाजाधासाः इत्यरुतागुर्वषणुः धधगुखनाः हार्गः ध्वकविजकुमाययापाननाधासा
पुमिकर्नाचिगरुते। अक्षयचिह्नरुयाचोन् ॥ १ ॥ ममः स्तुतनेभयनागगनयथायुक्तेन। यडाकर्ममभनकूच ॥ १ ॥ ममज
हृदयव्याजनेः सर्वजनादिनादयेग ॥ १ ॥ गगनपगकसामुदि सर्वसेन्यः कूम्भकानेप्रवेभयः कूम्भकायस्यग्राभ

ने श्री सुमूर्द्धा उल्लासयत् ॥ त्रिगु धामा भवन भग्न याग धामा मगि नूय कनः गथः रुकै नः नडा कर्मः जिनेः मय न गथ
 याय ॥ त्रिगु रु। सिग धाय धकं। आदाने वि या म ची नः ॥ उ गु वष गुः प ग क सामु दि नं ० संपूर्ण सैन्य मूकाः कू आ स
 या ड स पि न्य ची ना ची नः हे कू आ य आम क न भ म ध का कू आ या ग वी य विलं। आ ना भ न ना नी। सि ध य नं ४॥ ग ग ४ कू
 मा यं भ व व्या ज न। प ठा म्ब ता दि पू ष्य मा ला। स म र्प य ग ॥ च गु र्थ पू र्वः सं मू र्वा ना ना वा ध नः पृ ह २ आ द ये न।
 निर्ज व नं संपूर्ण ४॥ ग ग ४ कू मा यं ग त्थ न का द य गः कू र्का तं। गृ ह पु वं भ य ४॥ उ गु वष गुः की प ना स ग या म २
 धू म् क वि य कू मा य या ग सि ध य ना थः द भ नं दाय का स्वा न मा या की। ट्या य काः ध म् स्य नं कू वू या म। इ भ ४ र वा
 जंः ध का। त्रि उ ठ २ वि या भ निर्ज व न थ स्य पि ४ उ गु वष गु क वि य कू मा य या ग थ गु धा स गा न गा की गं। कू आ
 त या ग य पि गा या भ। पि हां भ य ४॥ ग ग ४ प द कं व च नं। सर्व स्था न इ य यत् ॥ न ह ष्ठा ॥ सां मू डि पा रू का चि त्तं वि चा य
 यत् ॥ द भ न क य। सर्व पा रू का चि त्त रू त्त रं ॥ उ ग त्प का य प द क स्य वा च ॥ ४० मि व च न। गु त्वा। स म त्रि ज न पो नी क ४

निर्जनवनसमूपागुयाग ॥ ७ ॥ वषट्पुः पदकपाशु वचनठना संपूर्वमेतिनेः मानास्वरुतं रुयाने मद्यनाः पदकसा
मृदिने साग ॥ ८ ॥ आनकनसकरने ॥ गनषु मयधु प्रिया निगि मेगिया केविकियाग ॥ ९ ॥ धुवि वचनठनाः मन्त्रिप्रजा
सिपाहि मूना निर्जनवनसं साजने ॥ १० ॥ गग ॥ ११ ॥ जाकनं कुमाजदग्गियनः मन्त्रि सर्वसं न्यादि स्वस्व ससाधनं पुहा
वधग ॥ १२ ॥ त्वयिगं त्वयिगं गमनेः साकर्म च्छादयन सासा गपियं सर्वग च्छाजिग ॥ १३ ॥ पिटवानस्य पुयिचि गिगम
मपयि सम एव १ गव १ कुमाजने एदयग ॥ १४ ॥ वषट्पुः आकाससं ध्वकुमाजद्वनं त्वस्ये प्रिः मन्त्रि सकय सिपाहिग
नपि स्ये प्रिनाः धधगु सस्र १ अ १ धयाना कविज कुमाज कयका ॥ १५ ॥ न ॥ नः कयका च्छेगः धवदका वय
पिकया कयका च्छेग ॥ १६ ॥ पिटवा मेनिकिया चिं गनायागः जिं न्रसमर्थरुय धधरुयानेः जिं नापजायम दूधका ॥
धाय ॥ १७ ॥ मेनिकु १ रुमूर्तिः अ १ धवगस्य त्वयिगं गग १ कुमाज वायु वगस्यः त्वयिगं ॥ १८ ॥ दाजकस्य एवाधचद
नदृष्टाः महावद १ अ १ तस्त्वनं कुमाज पयधग ॥ १९ ॥ अ १ तस्त्वनं वृद्ध पूजामनी च्छादयगः पृष्ट मन्त्रिः

आगगनहृद्वा ॥ उगुवषगुः संक्रियागं पिकयाः सचयागुवेगथयाः अनेः उगुवषगुं ध्वकूमायवायुवेगथ
 याः अनेः उगुवषगुः कूमायवाधसाः अगिरयययाः मिटवानः कूमायवाः ध्वं ध्वं अनेवेयसः ध्वं गमइगु।
 अंगवसः ध्वकूमायवाकावाअनेः उगुवषगुं अंगवययादूसेसः सिमायाकचासः चूणमनिरुचसां ध
 नाचाः अनेः अंगवसः अंगवययाकावाअनेः ध्वं ध्वं अयास्यगं ॥ हसेयलाक ध्वकूमायवाः ध्वचूणमिमदूस्पं विः गनध
 ध्वयापानवनवचयययि। ध्वकूमायवाअनेः धकाः ध्वजिवदयाचानः आध्वमदस्पं विः धध्विजागुगवसकावा अ
 गनेवचयययुधकाधय ॥ गग ॥ सूणमनिमकिः समाहिगः संपुभादिग ॥ गग ॥ पांचाविद्रुकापिल्यनग
 ययुधगं समकिः अनयोत्रिगं आगग ॥ गगसमूपाविग्धसमकिः अनयोत्रिगं ॥ अतातगमरुनं पुनत्वासमूपा
 गुय ॥ उगुवषगुं सूणमनिपत्तं मसूरमिजककयाः अगिरवर्तमानयानाअधयं आगडिजि ॥ उगुवषगुं
 पांचावधयागुद्रुगुः कापिल्यधयागुनगयअनेनूः सिपाहिदगनसकसेयिहं अय ॥ उगुवषगुं सकयपुमूख

मंकि प्रजासकस का पिथन गज सकस्य ने पूजा या जगत् अक्षय मं न जागानमस्का ज। याना धाय। हे महा या जग
 धूमः गुमदं न कय दया चो कथना सं गुम या ना ज या गुटव सकगा विनियोग ॥ दावकस्य गुमदं न कय सर्व
 स्थाने सं गुम वा लो वचने सं वा दय र ॥ गग ४ नागा रु सं पत्त चूण म नि सम प्य थ ग ॥ उ गु व ष गु या गा या ह स्र पत्त
 चूण म नि त्पु ज्ञाना विप ॥ धने तिः क वित कू मा ज या ग ति ना ज य नाः रू कः पत्त चूण म नि क या ह या ना ज या ग त्पु
 ज्ञाना वि गु या द व ध न या द व धू वि ॥ ॥ अक्षो त म न क ना गा या म न ट्पु सि रु याः सक तः मं कि या ग प ज ग न सक स्या गं
 सिया हि सक स्या गं ट्पु सि रु य कंः रा दि सित पा त वितं वि या ज थ म नं वा प्र स य या ना ज चो न श लं ॥ ॥ गग ४ कू
 मा यं अं ग न म हा य ऊः क्षा स्थाने ज ऊ उ धाय य ग ॥ गग ४ अं ग न स्यः स्व गु वा सि नाः अं ग न स मा न व र्णः य उ र उ
 र वि द्या मि ॥ गग ४ कू मा यं पृ थी पा रू के ग म नः मां का ज सर्व ण कि वा स नः नि वृ न ॥ उ गु व ष गु धूम कू मा ज

याद्याजवेदनाचूं मरुतः अंजनमहाजडनः धमगुधसगयाः चक्रायानागवः उगुववगुः अंजनजडयाः अंजन
वसः गुफनेवास्याकक ध्यावन्नरुयी मिच्याकं हाकूगुवर्तु अंजनधं हाकू धननेकू माययागवः उगु
गुववगु कू मायनं पागायसचूयाः गुगिनेचूयाः गमनगनाचानः आकाशः सकयपेंछि दयाचोकः पेंछि वास
यानाचानः गध धमकू माय ॥ गग ॥ सूधर्मावगि र्मपिटवानस्य समाचारं समाहित ॥ मनगुहृनरुगुपाग
स्त्वनममप्रार्थना दयता ममकर्म अथित ॥ उगत्यकायन सूधर्मावगि र्मपिटवानस्य चिरुगुहृयौ ॥ १४
त्वादिव्यधाविता आगमनः सूधर्मावगि र्मपुवोधयता ॥ उगुववगु सूधमावगि जालीनं र्मपिटवामं गिनः
महाजागायागधगु समचाव नानिने सियाः नानिया मनगुहृयानाः प्रसिवापसको बानागः जिगुपानसि यधक
चानः जिगु कर्मधिकावर धूगुपुकारेनेः ध्यानिनः मगिकल्यनायागुषनाः चिरुगुहृरुगुत्वसायाः धूगुः
त्यः नाः उ नागः आकासगु मिनिपिः गयाग सूधर्मावगि या धसग या आकासं रयासा विया हव ॥ ॥

हस्तधर्मा किं काय न प्राप्तागः न त्यागः न वः पूरे कृमायं जीवतिः अंगन स्तानं जायते ॥ न वः चित्ते बाधनं न सगृहं पु विभ
मि सर्वता कमागः ज्ञानागः सत्वेन संप्रसादिनं ॥ हस्तधर्मा वगिजानिः ॥ चू काय न प्राप्तागः याव न जाः याव मगः कं न प
प्रजाग कृमायः कृमायः कृमायः कृमायः अंगन रूपा धान विषा ना चान चित्ते या ना चू कंधडा काय मगः मन रूपा सचाय मगः न
नानं धमः कृमायः कृमायः कृमायः कृमायः अंगन रूपा धान विषा ना चान चित्ते या ना चू कंधडा काय मगः मन रूपा सचाय मगः न
रूप दयि मिनी धक गुह्य आका सगः गिनि नं आका दय कलः कं न सत्वेनः हस्त मान या ना पूग या गु नाम कया सो ॥ धन या ट
धूमि ॥ ॥ गगः कवित कृमायः अंगन रूपा धान विषा ना चान चित्ते या ना चू कंधडा काय मगः मन रूपा सचाय मगः न
वन दाव कस्य गमनं ॥ गगः कृमायः कृमायः कृमायः कृमायः अंगन रूपा धान विषा ना चान चित्ते या ना चू कंधडा काय मगः मन रूपा सचाय मगः न
सनेः जल न या नागः मगः अंगन रूपा धान विषा ना चान चित्ते या ना चू कंधडा काय मगः मन रूपा सचाय मगः न
ज्ञानागः सिन्धे रूपा धान विषा ना चान चित्ते या ना चू कंधडा काय मगः मन रूपा सचाय मगः न

प्रवर्गयानां न॥ व्याघ्रः हस्तिः वनवाजः स्वानः असंख्यथानस्त्रिः त्वाः इव दूः गजामृगमर्कियः सर्वपि वासस्त्वा नः क
 मापुस्वग॥ गगः साचिग्रुमइजं प्रवसः नवसर्वथानेन दृष्टाः महारजं पिंगतनामः एदथग॥ पिगवाजः असिनिक्ष
 वट० इहमगः दावकस्य इव स्थानं प्रवर्गयं घनप्रकाशयग॥ उगववगैः धूः किंसिः सिंगः त्विचाः असंख्यदयाची
 नथासजागरेवसायाधियथ कटिका गात्रचाकूयचासगसिनगीन॥ किंसियाः द्विपुहिगानां मरुचायां स
 कंतसिंहः अइवचीगोः एयानकथायसः मनुष्या एव रजमइथसः नागं उगववगैः थगुचिरुगुमनयानाः इ
 जवभजनानजमनुष्यसोयानेमइमत्वः थपिगुववगसः व्याधिके ज्ञानापनागकूमाजनं सिपुलमगुगुमिखा॥
 ८० क्षमइमः अधमिथव्याधने इजगन्यगुवा केनाधयाकूमाजयागकीगं॥ अस्मिदिनः कूमाजनउकपू
 प्रवेदृष्टाः दावकस्य कनूभाचिरुप्रकाशयग॥ गगः प्रवृषस्य संकष्टपत्रिगः अंगसर्वथाने इगथनः चक
 पुवअथमागापिगानामपुट्याकचरुधायनदथग॥ पृथिवस्थानं उवने प्राणिना प्रवृषः असूर्यवेदनागुजाः
 प्रवस्यहिहकिपयिगापिगा॥ उषेनूयादिनेः कूमाजनः कृष्णप्रवृषत्वने कूमाजनं त्वनां कनूभाचि

रुयानाप्रूषयागधायः उगुवषगुः प्रूषयागधायः संकष्टं पजिसमरुयाचीनम् । धयान्नः सकलनेः धायरुया
चीनः धायगनाचीनः हिपूयिहोमयाचीनः हिपूयिहोमयाचीनः मायागुः कडयागु नामकयागुः दहेमांर
धकावनीवजखियाः मिषानं विविपिकयाः धायाचीनं ॥ धनपि । थगुपुकायं प्राविजं नं प्रूषयाः वेदना संक
ष्टनयाः केकेः गुं गुंः ग्वदग्वदगुनाः रगजिनं रनकाः म्नेनां पंधायगिकाचीनम् । प्रूषत्वनाः धयगुइ ४ ट्वगा
गायः थम्नयाग वीधविज ४ ॥ उगत्यप्रूषस्य वेदना कूमायस्य दृष्ट्याः साअगकभजायगकायकगगनं ॥ साधूइ ४ ट्व
प्रूषः अगिअहिगनवेदनाः कष्टपनायग ॥ किंकायनं रगविनआगगाः कूमायनप्रूषस्य संवादयग ॥ गगु
समानवः मस्तप्रूषस्य सन्निधोः पुनत्वेगत्यवृत्ताकं निवेदय निविस्रवं ॥ उगुवषगुः थम्नप्रूषयागुः वेदन
याचीनगुस्वयाचीगुः धमलहानागुः ट्वनः थगुधंदानं धनथव्रम्सररुजसाः विमिस्ररुर्भूरुअंपिकयाज्ञानाचीन ।
हसाधूइ ४ ट्वप्रूषः सूनो ग्वर्जस्य नः आमत्रिगवेदना कष्टनकागजः कूकायनंः धनरग्विभयगयाचीनाः थथ

धकाः कूमावननः इत्यपूषया केन्यनः उगु वषगुः इत्यपूषनः महापूषयागः ह्येन्यः नमस्काजयानाः त्वसक गाः
 इत्ययागुः त्वः विनियोगं ॥ साधु भू नूः महापूषकिः कायर्कजागता ॥ इह पिगयाऊनं पुकागयता ॥ गव ४ मम ३ ४ त्व
 संक ह मूक ४ गा अनंगमनः नस्त्वनः साहाक ह २ ४ त्वसिष्ट मूर्च्छा पुये ४ साधु महापूषः नागि ३ प्रः सूदासनामः म
 सा २ हं वासयता ॥ असूर्य वेदानाः चंद्र वेद हि गः कूज वेद हः जमजागस्य महातयंकयाः सूदासस्य रूपं ॥ उगु वषगुः सा
 धूः हं च सुनानेः ज्वलस्य नः चोया हयः चू काज न धन ग याः इह पिंगल व्याधानः धनवर्क ना चो या हय ॥ धूगु
 थोः जि महा इत्यसं क ह गिरुत ॥ हानागः अनग ४ धन ग न्यः मदय का चीनः साहाक ह इत्यधिक हाजाने कूमाजः
 ध्वज मूर्च्छा रूप ॥ मूर्च्छा रगु जे का गि धात २ मूर्च्छा ये गु स्वयाः इत्यपूषनं धाजर हं साधु महापूषः नापाक मरु
 जः सूदासनाम व्याधाः महा २ ह व द्याज र ग मः धनवसप प चीना चीनः सहयाना सहयाय म ह्यः वदा च द्याजः
 पूषप निसः जन्मजाग थः महातयंक य मूर्द्धिः धूम व्या धाया ॥ गन ४ सूदासस्यः संत्व मूर्त्वं साजधयगु
 जं ग ४ पाथ पूषरा २ थग ॥ सर्वमानवस्य अहि ग थ इ द्याने व ४ ॥ अस्मिदि नमम गं त्वमूर्त्वं स हस्त प

जायतेः समः सर्वांगरुगये मर्म मर्मा करः ॥ गवः मूर्ध्नि मागु रगिय घटि सजीवमि । मध्या अपहवः सूदासस्य लक्ष्मी
परुषः गर्ध्वमूर्ध्नि नगारुयेगः सूदासस्य ममजकपियन ॥ उगुववगः सूदास व्याधयाः अर्ध्वयागुट्टाः त्रिचाः ॥
त्रिचानः महा एयंकवः जसजमः पूष इरिपिः नया विपिः सकलमनूद्य नयाः वूर्णानागयागुः काचरूकः
जामधसः पट्वाधजेगसूरुयाचीन । थउयागुदिनः जि । अर्ध्वमूर्ध्व त्रिचायाः जाहमिजानाअः जि सविजसः सज
सः ध्यावघावरुयकाचीनाः स्थानाचीन । थगुधसः एगिचामानिः निधो मागुः जिम्बायदनिः वाद्रिजावमः पुह
पुसः व्याधनअयाः थअनापनाअया लक्ष्मीरुगुउपजस त्रिचावीनातिअरुअरगयाअयूः ध्वनेजकाअ ।
यानाचीनः ध्वव्याधनः जिगुहिल्वनि ॥ पुमिदिनेउगत्युकार ॥ १० गिवचनंगुत्वाकमायसः निवायुधः ममचूग
मनिहवर्णः ममकिपृयाजनः सार्थिमिगुस्तर्ण । हाहा प्रावकहरे ॥ गगः साचिहात्माकवूर्णः अलूनाहुदयव्य
दनाएविषमि ॥ गल्लनमागु कहरव ॥ गगः जयकीहरेः जउनीस्य । गउयग ॥ वनिकपूरुव आदनाअर्धः

सार्थवाहगामनार्थविजनः रगवन्ममः पाजकूमाय कर्म किं पृथग्नः व्याधस्तान्नमममः ॥ उगुववगुः द्विधरथुगु
प्रकाययानाचीनः ॥ ध्रुविधगुवचनठः नाः ध्वजकविपकूमायः निपधरुयाधायः जिचुगमतिमदगः यैकधूनकै
यः जिं चूं पृथग्नमदगः सायथिवासोमद्रहाहाहैप्राणकहरुयः उगुववगुः थअचिगआत्मापमिः कयूनागयाः
ठनामायैः नूगवसः वीदनाशयः संकसुसुत ॥ एगिचाकहरुसुउगुववगुः नयाक्काथसः पाउसनीयनीस्यनः न
यागयाः वनिगायपूवृत्तैः धायाहायासदनेः सिंहसार्थवाहः शकध्वं थपाजकूमायज्ञनाः धिपगयानाअधिया ॥
हेरगवन्हाहादेवजिपाजकूमायरुयाः कर्मजिचूं पुः थग्नमरः कैवर्हव्याधयाउसः जमरुमजि ॥ ध्रुस
गुगानृपगिपवाधवेपिः महगापिनच्छादयग ॥ सहसासमूपागणं मेनिजनधोपिकाः स्वस्वसहाधुत्वाः ममः
ऊदननिमिर्ह ॥ चंपकस्तानंअवर्गगत्वाः गवच्छादयगमम ॥ वपूनायजकावस्तानंममगमनः गथानंछा
दयग ॥ गगः कूम्हाकायगहंपुविअतिः ममगवस्तानच्छादयग ॥ उकस्मिसमयानकवगत्वाः अंशधनः अंज

कवतामनाम। अगिच्छाक। ताहा। नगयू। छायागु। द्विपिकयागः। त्वाउगुमिद्वयायानाः। छायागुमिद्वयानेवृधनसायाग
 सायाग। हामिकवाचनरुमथहावाग। वोंवोंअव। सूदासवाधयाटवमसगयपगसमनिष्कटिवचाकमलिउगयाः। त्विः
 चायागधसा। गयाटंकथं। त्वय। प्यटवसंदिनेकिकाग। हामिसचूपागत॥ मृगममंगरगः। समजानां गंगतः
 सर्वसूकः। सर्ववज्रोहयवनं॥ सायमयः। विधागाः। सर्वहसिस्तानं पश्यः। वनाक्तयसिंहपाजं पयिगुमः। गवः। दृष्टनः
 वनजाजवहसि मर्थनसर्व॥ अथमृत्वीहंकातमृद्वेनेआगगाः। त्वयिः। धनू। सर्वमृगमदि सर्वजकुविस्मयानिपुवि
 सगं॥ उगुवषगु। चयापिनीगः। इगगाकथयिम्। चामयसायागं। धंवथानया व्याधिपः। सकयवनाहवथानयाः। इ
 यगायथं॥ अथमृषिद्विचानं॥ संपूर्णकिसियावथानसपश्यरुयाग। वनाक्तयसंः। सिंहपाजयागः। इषयानागथं।
 थ्यवनाग। वनयाजाग। सिंघहने। किसियागस्यायगुमच्छाव॥ अथमृषिद्विचानं। हंहेकाययाना। झाझाउना। वों
 वोंअयाचान। गयधाम्यस। अगम्यस। सकयदिभवथान। चया। वनजंकु। चयापनि। वीस्मयरुया। रागमरा
 गरुयाविस्मयन॥ कूजकूजगजद्विगियकूमावस्यदृष्टाः। गगः। सर्वजकुपुविसगाहृष्टाः। गवदात्रकमहावेगन॥

प्रविश्य ॥ गगः सूदासस्य दृष्ट्वाः सायमेयच्छादयः समसमासाः क्रमाजस्य पृष्टः अर्धमृद्वजागता दृष्ट्वा ॥ महावगसमर्थ
प्रविश्य ॥ क्रमाजस्य पयि शुमनेः आमलककर्म वृद्धप्रविशना ॥ उगुववर्गः ध्वक्रमाजपिः निम्नः अगुः ध्वक्रमाजः
त्वनाः धृगुधसः सकजं गुपि सकप्रविश्यं अगुसायाः धृगुधोः दावक क्रमाज महावगने विश्यं अना धृपि विश्यं अगु
त्वनाः अर्धमृद्वि विचागातगा कोर्गं ॥ चो चो चो धि क धि या ॥ अगु अगु धि क धि या अ को पा कोर्गं ॥ क्रमाजया विअन्या अ
षमृद्वि विचाः वों वों अनोलिगे ॥ धगु क्रमाज धि याना महावग वों अन ॥ अन्यगु समर्थ दगय विश्यं अने ॥ क्रमाजया अगु
पयि शुमरूया अः अं व मा ग या अ ॥ सा को थं क विश्यं अने ॥ पृष्ट सूदासः आगगे ना का अ दृष्ट्वाः गमन धि वि क र्त्त समसमा
स्य न छादय ॥ अर्धमृद्वि र्त्त काज अ दृष्ट्वा अ य त्युदरे नः सूदासस्य सवना गमन धि वि ग पुदरे नात्मा का अ दृष्ट्वाः
गाक गुना ॥ स्वानस्य दन दृष्ट्वाः सूदासस्य संवय दृष्ट्वाः हाहा काज अ दृष्ट्वा हास्यं कुय दृष्ट्वा संवादये ॥ उगुववर्गः पिउ न्य
सूदासनाम व्याधि अयाः धस्व या अ धि नूक वला अना ॥ धगु अ पन्यः धन क सा या अ धि कः कय का कोर्गं ॥ उगुव

वपुः श्वसूतवचिचानः क्राद्धाउनागिनिनूया। चाकतउतः व्याधनंधनूषसवताइयागः चाकतउताः थसायागचान॥
विचायागुभास्वया। विचायाउकसायाचानः व्याधनंधनूवतासायाः साहाकायगद्वयानाः जिजाः थगुवृपट्टहिसाया॥
कूमाययागधाय॥ याजसूनुः याजयाजयत्साहा अथवायाजयाजः ममः अपियंसूदासस्यरुद्धकल्यनायाग॥ अस्मिदिनः अयः अ
संइल्लरः एगवनचूगमनिहयर्न॥ मभनचूगमनिपुवभयग। वृद्धमार्गिकागः पंचिपुवाधयग॥ विधागाइइवः इहंपुपिचिगः
स्वानंकायर्ननरविष्यगि॥ अकायस्यसिभरुगुनमान्येदानं किंपिथाजनः मिहृतावंकिपिथोजन॥ उगुवषय। मनंतायपा। णथिठः आ १८
श्वर्यः याजयाजायासिनंचक्रवर्दिजाजाग अथवायागधायः कूवतः जिगुसपिर्गः थवाधागनायः रुद्धकल्यनायायद्रुमजिंजिंः आगचू
याय। अयरुजः अस्तमदः अस्तमइः इल्लरुयाचानः देएगवनः चूगमनिहयर्नरुत॥ जिगुचूगमनि थइगुरुसाजिः सिमानंः आकास
मार्गसगथवास्थनभंनगथंजिवासिनभनः आगचूयायः विधागानइववियाः इहमहाचडाववाधयागः विचायागमदयकं
वेयिरुतः थउ। थूज्जथथिज्जयाग। सिभरुगुनकेनानंः मान्ययायगुगुः थपागयानंधयामइः मिगुयानानंः पासाइइल्लरावनं किंपिथाजन॥

कदाचिद्गङ्गवनः सर्वशुभीयचूणमलिः जागताकसर्वपूर्वचन्द्रसागृहंजम् ॥ जगत्स्वानस्य व्याधिरुसं एव ॥ एगवन्त्याकनकर्मणः य
जसर्वश्रुथियः जन्मजन्मानकजपृष्टः आगगाः कर्मपूषार्थविबुद्ध ॥ गगः संसायदहजन्मइत्तरः गुणसर्वकिपियाजनः इर्जनस्य व्याध
ननसकं ॥ पापजातं वासयः स्ववंशस्थनिष्कलः सर्वउन्नगः महाइव अपवाधः इत्तरं प्राणभसथाः पञ्चभुजियं प्रयमहाएयइत्तर ॥
उगुववगः गुवयसंः गुवतसंः हाहादेवहे एगवनंः सकजशुभीजनयाचूणमलिजिः जागयाताकैः सकलपूर्वचन्द्रमायाविगुः थग
कूजसजन्मरुजम् ॥ थथीकः विचायाहसुः व्याधयाहसुसजाग ॥ हे एगवनंः पूर्वजन्मयाकर्मयागनस्काजगुगुयिकर्मनिष्कयधरसं
दांस्तिवः यजलियगसः भवषकश्रुथियः जन्मजन्मानकजिष्कर्मः कर्मपूषार्थयाकदायधिकाय ॥ उगुववगः संसायजिथिंमज
न्ममरुयमात ॥ गुणधियः सकजः चूं पुषाजनचूं मद्र ॥ इर्जनयागकूजययौमरू ॥ पापजातं वासयानाः थगुवंसयाः निसाययायिम्
चंद्रमारुत ॥ चागायाचाकः अथनेमहाइवजः धाषननं मद्रसाः प्राणभसयशयाः प्रियगसः भुजियं प्रयमहाएयंमद्व ॥
मानइयानिमिरुनः इवात्माहसुस्तिताः गवः करूणात्माचिगुनममयशपूर्ण ॥ गगः करूणायमानः कृगोजतिः श्रीमदायीवताकि

गणेशः सवर्णः ॥ निकायः वेदिदृष्टममः निकायः कर्तृत्वा एव महापुरुषः नयः ॥ चतुर्भुजः विद्युत्पुत्रः मकरं मम नयः ॥ उवाच ॥
 गगनः वायुः सूर्यः सप्तः ॥ आमतः कानिः कर्तृत्वा मयः पुनः त्वाममः उवाच ॥ वयं गच्छुः वध्वनः स्मृत्वा ॥ आमतः कानिः सप्तः यत् ॥
 उवाच ॥ मनुजः कुर्यात्तु मिर्मिलितः ॥ इवात्मायाः जातः गिरिः सः ॥ धृष्टः कर्तृत्वा त्वायाः चिन्ता ॥ मनुजः ॥ ध्वनिः निमित्तः कर्तृत्वा ॥
 यत्तुः यत्तुयायि ॥ धृष्टः कर्तृत्वा चायः पूजः ॥ कविः कुमारः ॥ जातः निपातः ॥ गीतः दायी ॥ वत्सः किं गच्छतः यत्तु मन्त्राय ॥
 उवाच ॥ कायः स वेदिदृष्टः ॥ कायः सः कर्तृत्वा गच्छतः ॥ महापुरुषः नयः ॥ जातः कर्तृत्वा ॥ चतुर्भुजः यत्तु नमः स्तुतः ॥ गीतः
 ध्वन्याय ॥ ध्वन्यायः मिष्टागिः सियागः चतुः ॥ अम्बुनिपातः ॥ जातः ॥ गगनः ॥ आमतः कानिः सप्तः ॥ यत्तु मन्त्राय ॥ विद्याध्वन्याय ॥
 दिव्यदृष्टिः ॥ गगनः कुमारः सूर्यः कर्तृत्वा विद्यायः ॥ कर्तृत्वा विद्यायः सूर्यः ॥ गगनः ॥ विद्याध्वन्याय ॥ नमः ॥ मन्त्राय ॥
 प्रधापितः नयः ॥ दायः कर्तृत्वा कर्तृत्वा विद्यायः ॥ गगनः ॥ विद्याध्वन्याय ॥ स्वानन्दः ॥ कर्तृत्वा ॥ यत्तु ॥ दायः ॥ दायः कर्तृत्वा ॥
 यत्तु मन्त्रायः ॥ निर्मिलितः ॥ वृष्टः सूर्यः ॥ उवाच ॥ ध्वन्यायः विद्याध्वन्यायः ॥ ध्वन्यायः ॥ कविः कुमारः ॥ जातः ॥ गगनः ॥ कर्तृत्वा मयः ॥
 ध्वन्यायः ॥ कर्तृत्वा नयः ॥ कर्तृत्वा नयः ॥ कर्तृत्वा नयः ॥ कर्तृत्वा नयः ॥ कर्तृत्वा नयः ॥ कर्तृत्वा नयः ॥ कर्तृत्वा नयः ॥
 उवाच ॥ विद्याध्वन्यायः ॥ देवीने ॥ अकायः यत्तु मन्त्राय ॥ कर्तृत्वा विद्यायः ॥ कर्तृत्वा विद्यायः ॥ कर्तृत्वा विद्यायः ॥ कर्तृत्वा विद्यायः ॥

आन॥ विद्याधतर्ल आकाशयागुवर्ल धलयानाः अयाः कविप्रकृमाययागकृत् विरुगया रुससुं चाना विरुगया विष्मग॥ ३
गुवषगुः विद्याधतर्ल साः विद्यायाग वाधयागः कुट्टट्टि + लंसायाः मम्बायकृमाययागः विनासकायस्यायधकः विमिर्ल
नक्षिमागयगः गयाययागानाचानकः व्याधयनाः गंपिकातः विद्याधयि॥ गग॥ माकागं संवादयाः इष्टंगवर्ल रुपुवसगम
वाधयः॥ ममवार्ल वचनं वाधनः किंपुयाजनेन वाधनागः दायकस्यः इष्टवपुवसयगः ममननसहः अवस्युगयग॥
उगुवार्ल गुयगोः इष्टनकुट्टट्टिः माकागं इष्टा संवादया॥ गग॥ विद्याधयस्य माकागं त्वर्जपुहायनः इष्टस्य भिज
उदयगः स्वानस्य भिचयग॥ उगुवषगुः आकाशे चानाः व्याधयाग वायवियाहलः रुचंदायकथनचायमगः उजिहाह
विहाहं वाधरुयाहं॥ जिगुवचननयसाहं॥ मत्तुः अयममत्तुधयागु रसाः जिनेचंगः त्वर्जनं पुहाययायगीत॥ चिरुवा
धरसाधुगुधामचंगुकेहं॥ मत्तु वाधजामरुधयागु रसाः धूक्तकृमायस्यायधसाः चानाचानागु रसाः जिनेसहयायम
त्तुः चंगनगस्यायगयः धुगुवर्ल ना व्याधनं कुट्टट्टिनेस्वयाः आकाशधथस्वयाहकाचंग॥ उगुवषगुः विद्याधतर्लः गं
पिकयाः त्वर्जनं चिदायाहयः व्याधयागु गययगधदनं॥ विद्याधतर्ल वसनः॥ अहंकातस्यावसनः॥ ताके ग्वयस्याः आ

नापदभः काविगनः इमियं ऊदयतः दावकस्य उक्ता यं ॥ विद्याधवस्य कुंठ सर्वत्रा विजडा ॥ गग १ मा ० यनाम कूमायं
 वृद्धमाकासं वाभनं दावक ग्राभनं तयसाकं वासन १ गग १ सनृप गियाजां कुंगा जैरसि पूपा शिग १ विद्याधवग मरु कं न ले
 वं प्रार्थय नृदा ॥ उवं के पुा निना सर्व अस वै वेद नाप पिपिदिनाः मृत्क मृत्वस्त्वनं सर्वय उं उधायनं ॥ एगवं सर्व १ प्रार्थ
 यग दावक १ ॥ उगु वषगु १ अं हं कायया वसा सं या के श्वयया हानया उय दे सं लाय मन काभ निम्र स्या तं स्या नावियः कविय
 कूमाय उधाय रुय य उा रुय विद्याधव या कुंठ रुयाः सकय वन च य ग य रं गु य उा रुय उगु वषगुः मा ० यनाम विद्याधव
 नः कविय कूमाय सिमा की कयागः आकाश वासनं धूम कविय कूमाय रुसाः हाना चान नः सिमा स चीन न कूमाय रुसा
 याग आसा रुय सा विद्याभ न जा यागं ॥ उगु वषगुः कविय कूमाय या हा विद्या हा भ ज व पा उ वा स ना या नाः विद्याधव या गः
 भवन पूजा या ग राजः श्री भ के श्वयधयः अति हर्ष मानेन च त यो व ध का विगियागं ॥ दया चो क सिया विद्या क क ध क
 ध धिगु वना के य स थ धिन गु धान सः सह या ना सह या य म श्रु गु दुष क ह रु या चानः थ स सकय य उा या ना विद्या
 क म हं सा के श्वयध क थुग पु का य क विज कूमाय न विगियाग ॥ १ गगि से प्रा र्थि ग ग नः कूमाय न धी म ना विद्याधवः

संस्मृतोऽवमादिभिर॥ गगनकुमायस्य विद्याधरा शुभप्रविशतिः दावचकसंदिवा गनावना लोचने॥ गगनदावचक
स्य विद्याधरा न सर्वसुविस्तरं सम्पादयत्॥ साधुगुरुदावचकः शुभाकर्नाथः अनाथः श्रीलोकनाथमहाकूटस्थाने। सर्वलोकजग
ममनाधिष्ठानं उगुपायारिधकंदयाग॥ संपूर्णमायाविद्यासूत्रसंज्ञः अवसजस्थानं च पूनपयक्तुहिंसाविद्यामभिनदियते॥
महाकाव्यलिकश्रीलोकनाथः पयक्तुमभिनवायविहकर्मविधिस्थापयत्॥ किमभिनवागदेषस्य वसासंयक्तुहिंसाकर्मया॥
उगुववगुः अनिरुपायान् कुमायधुविचिक्रियासंयतिः विद्याधरा नरसोः सकयराजपञ्जनं पूयगुग्धया आह्लादयकय। उगुववगुः कवि
सकुमाययागः विद्याधरायागः आशुमसवोनायना कुमाययागः अगिजसंज्ञः सुखनः राजनयागकयः उगुववगुः दावचककुमाययागः
विद्याधरा नरसोः विधिविज्ञावव आह्लादयकतः गथयाधसाः हिंसाधुगुरुगुहकुमायः स्वर्गमध्यपागायनाथः अनाथरुपा
जगतसंसाययाः ध्वसपायः धधिगुमहाएयथायसः सुहहिंसायाः सकलजाकयादयाः यज्ञापायगुः जिनः। अधिष्ठानेयायाः
उगुपाययागः अविधकवियाः जिनगवः दयाचोकविद्याः सकयः जिनविवागवः अवसजरुयिधसथधयायधकावियाग
चसकवविद्याविद्यागः हिंसायायगुक्तनाजिनमवूः लानः भवगुवियाः हिंसायायगुः जिनः मवूः सकययाकनूः मयध॥

श्रीलोकनाथः स्वः आभयिपगसः तिनः प्रायश्चित्कर्मयानाभविधिकयाभुमाः श्रान्तमानिः जिनेयायमानिः कुंयायजिनः
 जागयाः ईषयाभासवस्वरयाः धर्मकर्महिंसाकर्मजियायधूनचनगुकायनसं॥ साधुश्रुममविद्यामांयः हवत्स
 सर्ववृत्तानुपबोधयनः गगविद्याधयस्यः कर्त्तुं विगुनवीर्त्तुप्रबोधय॥ गगविद्याविश्वजदकर्त्तुं विगुनदायकस्यमायाभासविद्या
 सर्ववृत्तिगार्थयग॥ उगवषगुः हसाधुश्रुममविद्याधयतूकाः आभहवत्सजिनकनंत्वसकगोजिनकन्यमाय
 उगवषगुः विद्याधयस्ययागः कविजकूमायनं कर्त्तुं चायापूकत्वसकगं॥ विधविद्यायागकनं॥ उगवषगुः सकयविद्यासगभविः
 अधयनं कर्त्तुं विगुनयाः कूमाययागः मायाभासविद्यासकगं स्यानाभविष्का॥ गगद्विगियरुगियदिनेसूत्रनवासनं॥ गवदा २२
 यकस्यसूत्रसन्ननाधपुषगमनदधग॥ यथायथागमनगथासंकसुखनेउगगुविद्यापुकागिननः पुविगमिदभय॥
 उगवषगुः निद्रासादिनसमिन्नचानाभः उगवषगुः कूमाययागः सूपुसनेयानाथगुनाधगन्यगदहाभयन॥ व्यासविलविद्या
 धयनं हनाजकूमायः गनगनगन्यमालः उगउगथासः संकसुखः उगथासधूमविद्याधयपुकागयाजाभाः कर्त्तुं निःकनंथ
 उगदभ॥ साधुश्रुममविद्याधयतूकाः आभहवत्सजिनकनंत्वसकगोजिनकन्यमाय

चक्रवर्तीनृपाधिपः महडाष्टर्षिसम्यन्नामस्तसाहेः समन्विता गगः समूपासिगवामहम्यां माहिसिगव्यः पुगदिनं हि सिकातं च
दधत् ॥ उगवषगुः हे साधु भूगुः कविप्रकृमायं मनसमाधानयानाः ॥ कायायमाजः लोकज्यया कथा ॥ १० ॥ पादि संताजभाकयाग
जगगयानाः नाजायागं भाहयाना ॥ धूगुधः सकलयागाहयाः चक्रवर्तीधायकाः नृपपगिरयागः महाउत्साहः संरुकेयानाः ग
ह्वगुपमाकुमनः संपूर्णरुयाचानप्रचुहः ॥ गगः समूपासिगवामहम्यां माहिसिगव्यः पुगदिनं हि सिकातं च दधत् ॥ मष्ट
म्यादिनं हि साकर्मननं इग्निगिजायग ॥ गदासो निजयी वीचिमहदग्निः ॥ अथवा कृतः ॥ भीगीरुगमहानंदसूखाद्वारवगित्तिनाग ॥
उगवषगुः दयाचोकत्वगधधसाः अष्टमिदिनः उपासयानाहिसायायगुरुकागातगमात्रकानधसाधूगुदिनसः हिसायायगु
गातगाधयः ॥ अष्टमियागुदिनः हिसायायागुवापनः इग्निगिसनयकसलायीधधूकेयाकाजलसः उगवयसः लोकज्यया
गुगजगकत्वयगमिदूके अविचिमहादाहगुः हने अविचिनयकसीगजशयागनं चानपिंसकयः भीगयशयागमहानंदरु
यागः सूखरुयागः सूखगुगपियरुतं ॥ धधहे कविप्रकृमाय ॥ गवः श्रीकृष्णमयधिनमः मक्तुउवायनारुतं ॥ धयीरुतं स
मपुये ॥ पुगत्पून्धहतगवः हे कृमायस्यसूमयनी ॥ गगः संपुष्टिगासार्थवाहं यत्ताकयवानिष्ठंगमनः सिंहलदीपयाग

सीधनंगचमि॥ माहिनीकापयुपीनिहसुपस्यः जागानः वा निजातः श्रियं चैभगजनपोयिकाः शुद्धिनः सार्थवाहाश्च महाज
 नाशुलथिनः॥ उगुवषणैः कयून्मायापयजगम्भः श्रीकयून्ममयधकाधयाः मंकेउचायनयानागुः पुलावजम्बकायाहायाकोग॥
 धगुपून्मायापयजगम्भः कनगजानामकासांयद्रायागः उगुवषणैः पुस्कानयानागस्यंतिः सिंहसार्थपत्नाकयजगन॥ अ
 नः धनहिहसदीपसंः नाशुसियाधनसजने॥ उगुवषणैः भाहुरयांचोपिः कामयूपीरयाचोपिनिः सिंहसार्थकउजागः हनेव
 निजाजसकत्यः चिमरुठअयः वंगालसकत्यः शुलकल्यानसचोपि सार्थवाहः महाजनरूपादिसकतं धूगुधनसजाकपि॥
 उगुधनंयश्रमः सार्थवाहाश्चजनपोयिकाः सर्वमृत्फुल्लयंग्रामया॥ गगः संपुस्किनासोचलाक्कश्चयंपुलासयन॥ सिंहलदी
 पआत्मक्काशसीवतिगचमि॥ गगः सार्थवाहस्कानयनिकनवनिजाजस्यउपदअयन॥ उगुवषणैः धूगुधनयानाचोपि
 सिंह० सार्थवाहयासकनवंगालः दयाचोकमृत्फुल्लयाहयं हानाचोपि धपनिस्यंनः नामकायगुमगिहमगायकस्यचोनपि।
 धपनिधसः विष्णानाग॥ साक्कश्चयं धगुनामगजपिकयाग॥ सिंहलदीपसविष्णानाः पुस्कानयानाविष्णगं नाशुसिगनया
 धसविष्णगं॥ गगुउगुवषणैः सार्थवाहयास्कानयनाः मगच्यानागअगुयिसमगयागुमूहिरयागश्रीलोकनाधनेः सिंह

[illegible]

ययथयथस्थानं गमयथः धर्मदग्धनायुकाभयनः सर्ववनचरइः त्वपूवूषस्य आदोभजिपंड द्वाययग ॥ उगुववगुः
 जागवूमायनैः विद्याधयियाग ॥ असपययागजिनं नमस्कावह विद्याधयि जि विमिया नागु सकटां संभा प्ररुयमाय जिगु
 दसस सकत थितरुयायः जिगजनयकने निना थयामे वपि जिगु इ स थ चोः जिं अ धनं जिने वा जधनयायः संसायसः पं
 च ॥ १० ॥ दियन सदां जिहस यमायधक विद्याधययाक विनियाना अक विरकूमाय जिह विद्यागं ॥ उगुववगुः थूकूमा
 यं ॥ उगु थसगु थसगु थसगु न्यमाय ॥ उगु थस उगु थसः धर्मदग्धनायकनायः जयजनुपयिनि ॥ सिद्यः धूः किसि च
 याः सकययाग उ धायागनं वदाइ त्वं नया चो नकः श्रीकयनामययागुः ॥ प्रापायागु नामकायकायक वितकूमायनं
 बोनात्यजजायाना ॥ गग ॥ विद्याधयस्य वाजं आयाधनः सूमयवार्तमार्ग ॥ स्थाने अने गयूप पुकाभित न निर्हये आगच्छ
 ति ॥ मम अकुं संहायवर्गः मम नया धनृपमि सूष्य नमागस्थानं गमयय ॥ उगुववगुः विद्याधययाग वायंवाले आयाधनना
 मकयाः सूमयवयाना ॥ थस ॥ थस अने गयूपरुयाः थयगुपवाकु मकनाय ॥ निर्हययानायः थयगु दसस सीसंयज ॥ आ
 यः जिने जिगु कु दया चो कस्यागं ॥ संहाययाना जिने या धनृपमि जागरुयाः सूष्य न चो नायः जिमामया थनयन्य ॥ गव ॥ दा
 यकः कापिधनगपं ॥ आगच्छ गिपस्यगैः मनायमनर्हकिः किन्नयसायूपेगी गवायगधर्व ॥ अपसजायूपे नृपत्यदयः

उगत्यकायेन स वेमन्ति। सेन्यादि नृपति संगे भादयस्य गे ॥ उगुवषणुः धूमकवित्रकृमायेः कापितेन गथ आगच्छ मिम
लश्रुतिनेमनीयमयानाः प्याषनहूयाः किं नृपसीरूपं म्यहाजाः गंधर्वस्वरूपं वा मथानाः अथ सजायुषः व्याख्यानहूयाः
धुगुप्रकायनः संपूर्णमन्त्रिः सेन्यादि जागायाग संगे भादयाना भादयाना मिताचीन ॥ गग ७ अतमममक नृपति समावा
जपुकाययगः। आतनामः ममेनहस्य गे ॥ गग ८ र्मा विषाने सदिग नाथम नृपस्काने आगच्छ मि ॥ उगुवषणुः अतमम
नुजागाने सियकाय आह्लादयकयः चैत्रजगुमनहूयकाः धमने सायधायः उगुवषणुः श्वपिषानाममन्त्रि सदिग
यानाः दधूपिसे धनकजगल ॥ गग ८ हस्य गे जाजे माहमाया समागच्छ मि सर्वसूत्रमजल नभक्ते ॥ मनीरुधनरा
वनः अहामियमो नृप सागस्वर्गगस्थानेन नृमाधिनयन ए विषयः अहो आश्चर्यं गुप्तसंगीपयस्वयन गयि विधानाः
महाकव्यैः सहिः पूगीकन्याः अहो आश्चर्यः नृपमूढः महासूदय ॥ उगुवषणुः अतोवर्म नृजागायागः मायाककायया
चीनः सकसिने सियकधकसूत्रमजल यानाः अगिनेमनीरुवसाएवः गिथिठ आचर्य धधकद्वरुतः स्वर्गया प्या
खूः मनुष्यामखूः धिजागुजाः र्मावय संः सवने महाकहयानाः अगिनेके हयाठ दयकागजः मयहूचोमयिः अः

हा आश्वर्य्य रूपमूखरहायः सूत्राने उपमानय मद्र ॥ गुमयवथानरुकेथी । अदिकंः ऊकूया सवानवाकः हाकू सचिकनः
 कसनि कू सवानवाकः सकू थू थू चिस्यः सायगुयया पूगुस ॥ सूवर्ण्यगुललागः ०० नु धनूषः आवन ॥ उगुवषगुः पूप
 मिथिकथं कपात्रः अगिनंवाया निदाया कगुमिषा रुसिस ॥ हाय १ अगिनंवानवाकः हा मतस्वानया वान ॥ नासिकाः ००
 दिवयवावनः दय्यनः अं हकायदयर्न ॥ मूखउत्यवमोगदक विवूकः वयू नस्यपागं कर्णः कू लुतन सूवर्ण्यगुहकः सूक
 लसंरुवगन ॥ सर्वातं कात त्रषनः पययसाः यके पक्ष पगुसमाने पारका पृष्ट ॥ सा सा हृष्ट न मा हस मस्तं ॥ उगुवषगुः
 आसधा साः उ अयस्वानः वान मिखाः ऊसकः सायममवाक हयनयाकाः मूखउत्यवमोगदक अमनः नागया थस थ चीनः
 उऊसपनः कू लुतनं जागयमानेः यूया रुवथ पा हाया वर्ण्य नूगवस इर मिअ सं पूर्ण आरयनया गुगज नाया ची निथ
 त्या गुपलस्वानया रुवथं वानवाक गुमिया पापिगवसं पिना चीनः साया गुसाया गु । मा हृष्ट या चीनं ॥ पूनववायं गीगा ददि
 विचाय थग ॥ गु विवडूयः अऊ । अयति अगन्या अहसुकाय सर्वगुहय अग ॥ उगुवषगुः म्यहात गुविचाय या ना ची अ
 रुमिसन के गुमिषा कन्ये गु असन के गुः यवा द्वा च किं य गु वि थ वा कं मा हृष्ट गुसाया ॥ गगु ४ गगु ॥ गृगु ४ गगु ॥ गृगु ४ गगु ॥

वासवकायगतपेदनासनः। एषिवात्मनः किंकिआहादयकयं स्वयं २६ शुभविधानः देमकिः ॥ १ ॥ शुभविधानः देमकिः ॥ १ ॥ शुभविधानः देमकिः ॥ १ ॥
 नृत्तचमयीमयः ॥ चिगुविचिगुनः ममनजिगुविगुहजलयाग ॥ १ ॥ शुभविधानः देमकिः ॥ १ ॥ शुभविधानः देमकिः ॥ १ ॥
 अपसजायामधसमनकाधायाम ॥ १ ॥ शुभविधानः देमकिः ॥ १ ॥ शुभविधानः देमकिः ॥ १ ॥ शुभविधानः देमकिः ॥ १ ॥
 गुविचिगुपदकुमः समस्तमिषायास्वादकायधूनः ॥ १ ॥ शुभविधानः देमकिः ॥ १ ॥ शुभविधानः देमकिः ॥ १ ॥ शुभविधानः देमकिः ॥ १ ॥
 कस्वजस्तगंगयागीगमूकनाम्याहाजागविनावाय ॥ १ ॥ शुभविधानः देमकिः ॥ १ ॥ शुभविधानः देमकिः ॥ १ ॥ शुभविधानः देमकिः ॥ १ ॥
 विनाहागर्नः जिमनस्तिमम ॥ १ ॥ शुभविधानः देमकिः ॥ १ ॥ शुभविधानः देमकिः ॥ १ ॥ शुभविधानः देमकिः ॥ १ ॥
 स्वयः ॥ १ ॥ शुभविधानः देमकिः ॥ १ ॥ शुभविधानः देमकिः ॥ १ ॥ शुभविधानः देमकिः ॥ १ ॥ शुभविधानः देमकिः ॥ १ ॥
 गगः ॥ १ ॥ शुभविधानः देमकिः ॥ १ ॥ शुभविधानः देमकिः ॥ १ ॥ शुभविधानः देमकिः ॥ १ ॥ शुभविधानः देमकिः ॥ १ ॥
 ग ॥ १ ॥ शुभविधानः देमकिः ॥ १ ॥ शुभविधानः देमकिः ॥ १ ॥ शुभविधानः देमकिः ॥ १ ॥ शुभविधानः देमकिः ॥ १ ॥

उगुवषगुः श्रीरुमयीमयरुयात्वायः पथे स्वा नयाय ससः मिखा मिमका मः अशायमनकाजाया नूगवसदनं गथसाः कामयायगुमनयाना
 श्रीरुवधययागः धरुका मयाः लया नानंः श्रीरुवधयरुयायया अशायमनकाजायात्वायसः चयमिपिचायः स्विपाचीनं ॥ गगः दिनसन्ध्याः
 कालसंपूर्णपत्रपुवाः पाजिगाधिनः पूगजीसुदागवोददस्व ॥ गगः ४५ लूसाधूमाहमायाममनृपमिथानं अकपूजस्का नंवागच ॥
 उगुवषगुः दिनससधमकालरुस्येयिः दयाचोकः धनसंपतिः दययोगयाः मूखसूद्धिः ग्वचग्वयगयाः सिधायः विद्याः धमाममयी
 मयरुयागः दुःखविद्याधमः गथः धमसा उगुवषगुः ॥ श्रीरुमयीमयरुः कः जियमिसयाः जिनाजाया धनसंअकपूजया धनस
 अयमायथथं ॥ धयायः यागकृतसजनायः काममरु रुयायः श्रीरुमायामयीमयरुजकरुमनकायचीनाचीन ॥ धनैपुकायर्त्त ॥
 कूटकामिनीः नृपमिसुहृदयपस्यः असत्यपूषसंसाजस्त्रिहमायाः यागस्य धिजथग ॥ गगः सायानकागिमूखमदनागुपनृपमिका
 मयागीः साचिदेन श्रीरुमायाहजर्त्त ॥ गगः नृपमिमूकामूकसाचिरुयगः ॥ ०० दिवावसजः यागस्वरूपसिमाया कूअय ॥ कयन
 नंसुदप्रिरुममिसाः अशायमनकाजायाः नूगजनं विअमयानायः असत्यपूषनैः संसाययाः स्त्रिहमाया धं जाजाया श्रीरुः विस
 स्ताययागं ॥ उगुवषगुः संध्याकार्ये सिधा वरुद्धिथस धमाममयीमयरुयागु कामनेयागरुयाचीनमनाजायाचिरुयानावीन

कय चो गं: हय न्या नाह उगु वषगु: जागया माक पूया गुरु य ह्ये नाअ: वूडिं या अव सप सध मी अर्थ काम धन गुणि वर्ग रु ल वि
 अ पजगु थू का सि मा ऊ दया पूज य स स्व रूप रु प्र वि भ म ॥ संपूर्ण काम मद या ग धन ॥ गु म पे पूर्ण व धन या ना य क ॥ म रु
 गज काम जाग या व स न अधा म स हा व ठ ॥ गगु ॥ मूख धन क: सू ट्ये न स्वा दय: कू ट का मि नी: जाग वि ना अ ॥ गग ॥ जाग न स्य मा रु
 मा या दृष्ट न ॥ उगु वषगु: मा कि सि नं का रा ग हा स: जश म या क ठ स ॥ अंग ल म य स का ति न अ नि ध य स: मा कि सि नं उगु वष
 गु: दा स रु न प नि: सू ज स नं त्व ज्ञा ना अ कू ट का मि नि सृं द वि मि सा: जाग या कू ल स मा ना ह य: उगु वषगु: जाग नं रु य सां: मा
 रु म यी म य रु त्व ना अ ॥ त्व नं गु नं: ध जाग नं: इ गं चि नं मा रु रु या अ: मा रु वि ष न दा रु रु या अ: धे र्थ या ना ग ल गा अ: रु ग
 स नं पु का क स नी ना अ: आ लिं ग न या य ग: ग या य रु वं ॥ जाग या का ना य प ॥ गग ॥ जाग न स्य रु रु स मा य ग स यी स न प स्य
 ग ॥ उगु वषगु: जाग मा रु मा या म यी ति मि या य प नं पु कां ग रु या य रु वं ॥ उगु वषगु: वि धि जा हा अ ना अ दे वा सा स ची ना
 अ अ नं क त्व ज्ञा ग ॥ नि म्म सि या वि धि र्वा ग स रु के गु ना अ त्व ज्ञा ना अ र्वा य या ना अ ची न: रु नं ध मा रु मा या म यी
 म य रु धा सा: जाग या ग काम जा ग म वि स म या कू स्य: त्व नं ज क ला हा ग नं ज क काम जाग मा रु या ना ची न: जाग या

धासाः कामगवधयस्याम कामविषहयस्याचानः धनंतिः थुगुपुकायं संवाटयां २ वाचागावधगसः गथारुतधासा ॥ ठग ॥ गग
 माहमाया रूपच्छाविगनः कूमायपुपुकाभिगः कविधनआज्ञापिग ॥ गृ नूजाजं अहममनाद्यभन काममनदिः ॥ गृ नूगोशीस
 वगस्यपुगः सूधर्मावगिगर्णननगागममः सर्ववत्तचूगमनिमोलावीजकूमायममः कूजसंगष्टगुगानृपगिः कन्यदृगुगा
 मम ॥ गगः किवाष्टगगः निर्मिर्दुनममनसिभहाच्छाविगः धृष्टगुगाकन्यदृगुगासमासयसूषनजाजगगहत्वाः
 गवनुकान्कवाष्टगग ॥ उगुवधगुः माहमयीमयरः पूपगायनाकविजकूमायं यागुपुपधसयानाः कूमायनं आह्लादयकजं
 उगुवधगुः ठग हेवागाजिः गिरुसांः व्याधूनमद्वः अपसनांमधूः कं ठगः साच्छगसत्यपर्थजागायापुगुजिधूकाः सूध
 म्मीवगियानियागर्णनंजमरुणमः जि ॥ दयाचीकसकजपत्तचूगमनिदुमः विजकूमायजिधूकाः कूरुसांः पापिह
 दाहानृपगिवाजाचंः कं किजाः गिरुसाच्छगः उगुवधगुः चूवाष्टगगयाययाहने ॥ गिरुसांः गायनाच्छगकंः कानंधासा
 दाहजि ॥ किजाः निममिधरुयासूषनं जाजगगयानाचीठगुचंः थउयाकचाः गगयाग ॥ ॥ गथचं गगया
 यादयिअधमिधरुयापिहदुर्जनः विनांपनाधः निजधधः वातकजः गिरुगथिग्वद्वसमूडसकृगिकलः चूम

हापापिह न पुनर्वालः ममः शिकर्म्म न ध्वरः त्वसमूह न प्रया नाभजिभयधून ॥ गगः धनं लिच्छु पापिह चान्यातजिला हा मि
सजागधकः धालं ॥ गगः पुनर्वाजः रुद्ध याय धासा घावरूयूः पुकाभरूया गिसकस्यानं सिरू ॥ उगत्युकाधनज्वयनः आहूय
धजिग पस्य गगः आहूय धजिग नय पायस्यः आचन एव ॥ गगः पूर्व विद्याधय वचन दावक दय सं सम समूपा सिग
व्यम हूम्यो हि सिग वंः च पुनः अस्मिदि नम हूम्यादिन न एव ॥ थ्रिया निगिः ग्वप ग या नाजियूः झापाया थं क याभ चावः
गथ धासा आहूय रूयाः नय पाय जजा यागः स्याय गेनः उगु वषगु ॥ झापाया गु वचन नम नाभः कविय कूमाय याः नूग
यस धंदा रूलः उ पासना याय मायः अह मिषूदूः हि सा याय मने अ धाज ॥ हाक नं ॥ थउ यादिन मत्तूरा जपाभ ॥ पुनर्वाज
आहू मयी रूयाभः से ल ग विय धा याभ ॥ जनु जूयः अणु ॥ जजा याग त्व हं चाभा नाभ धाज गथ धासा जिग चैः झापा रू सा
सिरू या थ्र विषा रुयाभ स्या य धक रूअ न्ने चै धक धयाभ ॥ त्व रु चाभा ना गिया आच का विल ॥ उगत्युकाय या गिस
मयः पा ध ॥ जजा हि धक का स्य रूअ न्नेः गिका धावीः दाहू आच काभ ॥ सामा छ ॥ चक्र वर्त्ती नाजा या पद वागं ॥ १॥

गगुः प्राग्वत्कायः मन्त्रिपुः मूखकविप्रनमः हमायात्रपच्छात्रिगनः कविप्रपुपधप्रिगनः सर्ववालीगविधानस्य संवा
 दय ॥ गगः सर्ववालीसंपूर्णसामागस्तानं मन्त्रिपुविभय ॥ उगुवषगुं सगिषूद्रमंत्रिपुमूखसकथमूनकाः कविप्र
 कूमायनः मारुमायामयीमयरगाजगाभः साच्छुगः कविप्रपुपधप्रयानाः सकयदयाचोक्तवः ग्वपिषामंनियोगः कना
 अजाहादयकनं ॥ उगुवषगुदयाचोक्तवः धूंस्पयिथअमामयाथसरपिषानअन ॥ गगः सूधमीवगीसमूपाशु
 ल्यसर्ववालीपुवाधयाः कूमायस्यवचनं सूत्वा ॥ गथसगिसूधमीवगिः पूषध्विगीसमन्त्रिगं ॥ गगुकापिल्यनगजसमा २८
 ताकैपुविभगिपुलासयन् ॥ उगुवषगुः सूधमीवगिजानियाः कृणन्थीनासकयर्वालीत्वकनाभः धयः कविप्रकूमा
 यः कलधालयापूयः धधकाधयाः धयः धूगुत्यमाप्रः नाविष्मगंः धधसंसाजयाः मोधायकाविष्मकः पून्य
 यागुपयाकुमंभालनंसेरुकेधनने ॥ धनर्कापिल्यनगयसः सास्थं धअगुगयिकयाविष्मगं ॥ गगुगीमकसमात्ता
 वः दभयधस्यपूयकूमायसूधमीवगिवचनं सवादयसंपुमादिग ॥ सूधनवासय ॥ गगरावाध्रिष्यकसमागम ॥

गगः दायकस्य पूर्वद्वयसमस्तथाः जागर्ह्यमाह वसन ॥ १ ॥ अथ शाशादृशगजिजं अग्निनसस्कातः प्रयाग ॥ ३ ॥ उगुवचगुः ध
अग्नीसा लयमानरुजः दग्धार्थजागाया कायपूगुः कुमारसायाः मामनं ॥ ४ ॥ काययाः द्वात्रसायाः आह दयकतः ॥ ५ ॥ पूगु
घनं वाभयानाचा ॥ ६ ॥ उगुवचगुः जागाहिषकयदनाभाचान ॥ ७ ॥ उगुवचगुः दायक कविज कुमारयाज्ञापागुद्वयमनाभा
जागर्ह्यमाह रूयाभाः दारयागनिबृया रूयाः सजिजसः अग्निनसस्कातमयास्यः आलसकाज्ञाग ॥ ८ ॥ गगः प्रायविद्रादियं
विधिपूर्वकं कृयाकर्म समाचर ॥ गवगुहदिनविधिपूर्वकियाकर्मविधिस्थापय ॥ ९ ॥ उगुवचगुः धूगुपापभाकयाय
गः दिपकायविधि कृयाप्रापा कृयाकर्मयाना प्रायविद्रकाजहने शुहदिनसायाविधिपूर्वकयानाः कर्मविधि थापनया
नाभाचान ॥ गगः धनं लिक्विज कुमारनं शुहथिजलग्नव्यजास जागाहिषक कयाभाजा रलं ॥ १० ॥ उवदायकस्यः सूधाया
निवहृनिबृत्वाः पापानि निग्यं समदाचरं न ॥ ११ ॥ रूयागिपाथषपिगेचनकाद्वानिगुह्मा नियय बुगुगु ॥ १२ ॥ उगुवचगुः
ध-गुपुकाजं कुमारयागरीगपिकयातिगः किजायागअसंख्यद्वसिकाः समूदुसकूठिनच्छायागुचययानाद
खनकजः पुनर्वाः धूगुपापसचययायाः गगनयागद्वनयाः अज्ञाजमनजागा नजकसवासाजग ॥ १३ ॥ अहृतिद्वः

जानचादि ध्वजलाजमनजागाः भवमद्वूः ध्वपापि ह देवद रु धूकाः ध्वक वि वीजजागां ग्वलागा जागल छी जा छल गगया
 नागः अकालमृग हयागः गुगु वधपापनः नजक वासरुतं सरुमु वर्षपर्यन्त ध्वपाप लगया गगः जागलं ध्वया
 लगनः पादांगु ह सद्यापुतं । जनु पनि स कल्पकल्यान कुय रु सनेः ध्वमं या नागु कर्म कुय मरुगः विना लगन । जमा
 बर्क कुम पवित्रयः पचामं पञ्च धाग सुत जल गगुगु वग कर्तुं नथपि ॥ गे से नाना वस पविक प्रेः काय पागु खरु कंः कल्या
 पापेव पि न पूषः कर्म अषज हागि ॥ उग वषगुः जम रुयाः कर्म सेष इ गथ अं न ग पूष पनिस्यनेः लगया यमावः जम प
 यय नाया अकुमने मा कूगः सुत संः जल संः सिमा संः लाह गे से गर्त वा सरुव ध्वग नाया गर ॥ उग वषगुः नाना वसनेः अज
 सनेः अलिय थ पूय संः लगया गः लगमया स्ये कर्म कुय मरुगः सधर्म चतु या यमावः धर्म न स्वर्गः धर्म न सूर्य लगः पापनः न
 जकः पापन इव लग सधर्म कर्म या यमावः सधर्म न निर्वान पद मादु जा यु रुव हे अग क धक आ हा महा जाज अला के थथ
 सियागः अं न कज तने ॥ ॥ ससूर्य वा छाया नाग दग्ग कूगल कर्म गा जगागः मिशु कर्म गा जगागः पाप कर्म गा न गा ॥
 अरु कं डीय ग ने वः कर्म कापिक दावनः सामा गु प्राप्ता कातं चरु त निव तू द दि ना ॥ गग ५ गत स रा सं न स्थि स्वा ॥ ॥

२२

दीर्घनख ॥ सद्धमसमाचयः मुनिश्चयस्य संमूपाचयः भावविन्दुः दन्दुर्वपृथिवि विधायिगः स एतस्य समूपाचिनः ॥ ७ ॥ गुववयुः
थमेयानां कर्मभिर्मः पापकर्मरुजसाः कूकू कर्मयानाः एगमयास्यं कुसमरः रुवोय रुयाजः आनाजः कर्मरुतलयर
लः धनेपिमहायाजः अश्वकथथिगुपयेपयायाखन्यनाजः रिदूलाकआनंकादिसकलस्यनं द्दिक कर्मधायपयार्थलंघ
नायायमज्जुधक एवपचोनः धूगुजवसयसे ध्वस एतस्योचोनचोनम् ॥ दिर्घनख ॥ बुभ्रचाजिसंन्यासि सर्वर्मसं चय
यानाचो हम्ननः एगवानयाके कुणन्यथो कजायाः पाविस एतकपूया दंदकथिनं पृथिसचूयाजः एगवानयाके वि
किः ध्वगः एतगवान ॥ एगवनसेसायसर्वयाकदहिनास्वस्वकर्मरुतं स्वकर्मरूपं सूखरु ४ टव एगग ॥ ७ ॥ गृन्नाः
एगवकिंकिं कर्मसमाचयः ४ एगवन्नस्य वजकायसर्वगुएतदुलसंपूर्णः गगिगलदुलसंरुगं असीगिवंजरा
एगगितरवनव्यापिगः ॥ ६ ॥ गुयूधसंसायसदयाचोकाकपिसेने धमयानागु थथगु कर्मरुतगुगुटवः धमयाना
गु कर्मरूपगुगुटवउगुगुगु सूखरुटव एगगयागधक चेतपायं आहादयकि हे एगवाजिने चगाविमियायचुत
थाहचूचू कर्मयाना गुगु कर्मयाना हे एगवने चेतपायया वजकायसयिजससूएवदुलनंसंपूर्णरुगम् ॥

सूर्यमितायुर्नसंस्कृतं पाचां कृत्वा गा वं जननेन । इति यमानरुणः स्वर्गमिध पातायः भवसंमदः ॥ ६
 वागिदेवदेवजसूरत्वं वज्रकायाग पाषाणसहावनकुर्यग ॥ देवयादेवियाः देवया मनूष्यायासंमदं चतथा
 तया सपियसत्त्वा रुगनं कयकलनं गथा घातमरुत ॥ ययनु कर्मवशा सनं सज्जक उग देवनममाज्ञापिग ॥ एगवानू
 वाच ॥ साधुगुणमहाविह उका गुचिरु समाधाय गिपत्तस्य गय नंगत्वा उधा प्रधनामवुर्ह समाचय ॥ ७ गुववगुः कर्मवशा स
 नः संज्जक मागुः घातयः हेतुगवानः जिग आह्लादयक माय ॥ ८ धधध कर्मगुत्वठ नाः एगवाने आह्लादयक यः धं देव्या वासि
 कः एगमानिजनवः कं नरुजसो उका गुचिरु यानाः उज माय वृद्ध धर्म संघया भयवशा नाः अहमिबुर्ग चययाना ॥ ९
 भमाय रुः दिर्घनामः ॥ गगा विचिमहा नयक सं ह्यधयगु मर्हतिः सर्व प्रातिपु वाधय ॥ १० गुगति नं बुद्ध जाग समाचय ॥ श्रीता
 अग्न्यतस्य आह्ला ॥ कूमायस्य गुा नचिरुः अहृगगास्य भीचयग ॥ ययनु मा ० यस्य वचनपिचि नयग ॥ समूयासिगव्य
 अहम्या हि सामा विधया ॥ ११ गुववगुः श्रीकृष्णमयनं अविचिनयक स सक एनं पञ्चा याना गजपिकयाः सकयदया
 चौक प्रातिपया जिवया आसायागः उधा यय यागः ध्वरू नृनिस्थ धूग अहमिबुर्ग चययाना श्रीता कर्मवयाग आह्लाठ ना ॥

उगु वषगुः कविप्रकृमात्रनेपुन चिह्नं रुपायः दारुयागुः हि सा कर्मयागयास्थं लिः लिपनसः विष्णुधर्मीयागुः वचन आह्लाद
यकाहगुः मन्त्रमनायः उपासनायानाः अहमिषून् हि सा धयाहगु वृद्धयसया वृद्धयमयास्थं सात्मनका ॥ अं हं काजी
रुपाय धनियादिनस अहमिमत्तुलजपाय अलात्मनका दारुयागस्याना वित्तं ॥ पवनकुटुम्भ मरुदरुपाय अहमीउपासक
मीमयाग ॥ धर्मनंनप्रकसलगयाग ॥ गगनसगायस्य चजमजन्माहवप्राप्तिपागदम्भू अलकर्मच्छात्रिगः चतुर्व
र्द्धात्रिगः पुनत्पुन्यपुलखनपविहंकायस्थधनं सर्वपापहयं ॥ वज्रकायगुह्यचिह्नं एव ॥ उगु वषगुः पुनं गापचाया
यः जमजन्माहवसं प्राप्तिपापआदि दम्भू अलकर्मआदि गाजगायः मेगिकनून् मूदिगाउ ध्याताः चतुर्वर्द्ध
त्यानाः धुगुपुन्ययापुलवं पुन्यपुविनकाययत्रिप्ररुया दयाचीकपापरूनाय वज्रकाययत्रिप्ररुयाः केवल्यगु
ह्यचिह्नं रुपायय ॥ अदलादानं सर्वप्राप्तिमेगि बुद्धिनाज समाचजः पुनत्पुन्यपुलखनसर्वद्वच्छात्रिगः चक्राक
प्राप्तिपाद ॥ सर्वसत्त्वाएयवतः मिथ्याकामपत्रिवर्जयत् ॥ उगु वषगुः अदलादानधयागु गाजगा लाकयागसिभहग
याः अहमिबुद्धचयाग ॥ धुगुपुन्ययापुलवं दयाचीकद्वयः रूनायन पाजाहनसंः पात्रिसदाः पच्छि आजच

बुद्ध्याऽपि दया चोक्तं अत्र वचनं मिथ्या कामरूपं गतं चोक्तं ॥ बुद्ध्याऽपि नात्कृतं सर्वं संसाधनात् समर्थं चिन्तय ॥ ३१
 त्पूज्यं पुण्यं वचनं सर्वं अगना अनं पप्रिपूज्यं आसु भवर्धय ॥ सुवर्णं समानं ॥ गतं मृषा वाद पप्रि वर्जय ॥ सत्यं वादि बु
 द्ध्याऽपि कर्म नात्कृतं जागर्हं वमना भय ॥ ३२ वचनं ॥ ३३ बुद्ध्या नागुहं वे सक्रय दया चोक्तं लाय पाणि ॥ ३४ पूज्यं या पु
 ण्यं वचनं संपूर्णं अगना अनं ॥ अत्रिपय हारया ॥ आसु वधरया ॥ लूया गुवर्णं समानं धिना ॥ ३५ वचनं रुसगा पद्माय
 गु भयना अ सत्यं वादि रुया ॥ अहमि बुद्ध्या नागु पूज्यं जागर्हं वमना भय ॥ ३६ रुनं अ गित्या ३७ अ गि
 सात्कृतं ॥ ना हा कस्य ॥ जिह्वा मय रुया ॥ अ गिनं कामरूपं सुन्दरं गम्य ॥ ३८ वचनं ॥ पुमाद पाप स ॥ धर्मं समाधाय बु
 द्ध्याऽपि समाच नात्कृतं ॥ सिद्धयथा पया कुमं धर्मं गु व संपादय ॥ अकाय पि न गज य ॥ मय वा स कर्म नात्कृतं ॥
 इवा कून्दु निष्कय समवर्णं च गु द अदक संपूर्णं ॥ ३९ रुनं विन स रुया ॥ धर्मं स समाधाय न या ना ॥ धर्म द ना गु पूज्यं
 सिद्धयथा पया कुमं दया धर्म नं गु न नं पूज्य रुया ॥ ४० रुनं ॥ अ वय स गज न मया स ॥ अम निहया ना ॥ धर्म द ना गु पूज्यं
 नं ॥ दाप स्वा ॥ चंद्र मा या ॥ गु गु गु वर्णं रुया ॥ पिय पू दं न नं पूज्य रुया ॥ ४१ रुया ना स पु का भि ग द अ दि गं ॥ गतं सर्वा

लेकात्तु विगः पूषमासाः श्रुतिं मं शुद्धीर कि प्रमानेन वरुके संमाचय ॥ उगत्पूच्या नृतावन जीत स्वयः शुगधयुक्ताः
आकं ० दिय शुद्धात्मा सगुन संपूर्ण ॥ उगु वषगुः द्वि। प्रिगु धेयसः गविगु पुमाने गजधिसाः ॥ अयागु गजः दधदिगु
संषणनं। पत्रधिकं धिना चीन ॥ उगु वषगुः। तिसाने गिया प्रागपुनो वजयागु अ स गं पुनाः स्वाचमाजा का प्राया
जागे जागयागुः शुद्धात्मा कि गया मायगु पुमानेः वगु चयया नागः धूगु पून्यायार्कः अनृतावनंः वोजानाः शुगंधवा
सनादयाः रिं रिगु मिट्वा रुयाः शुद्धात्मा रुयाः सगु नदया चीक संपूर्ण रुया ॥ नृतागीत वाघः प विवर्जित ॥
उकंचिरु शुद्ध संपुनः उपाखन वृम कर्म नात्पुता वं। सूत्ररुन संरुगः दिव्ययुप गेज पुका गिन काय ॥ उगु वषगु ॥
प्या पुन ह्ययगुः मिहायगुः वाजन थायगु गात गागः उकंचिरु यानागः शुद्ध आत्मा रुया उपाखन वृम याना धर्म दनागु
पूयं वरुनं पूत रुवः के वत्य सर्व वरुनं गेज पका गरुगु सजित ॥ ॥ हं नं अगि गाजागः आसन गाव गागः सेगु
रुगु शुद्ध चिरु यानागः उरुम वृम चयत पा पूषन गविगु रुत धिसा थ क वितरू माय याग ॥ प्रासन रिपत्तासनः
स्वर्ग मय पा गासासनः विष्णु वृम वृडासन प्रापाग ॥ उगु वषगुः गविगु आसन धिसाः वृध धर्मः संघ आसन ॥

स्वर्गमय पागाजं सातः विष्णु आसनेः बुद्ध आसनेः महादेव आसनेः धर्मि गुरुत्वान्न ॥ भवने मित्रयया यमहः स्त्रिया आ
 सने जाजोम माय ऐगयागं ॥ नमः नमः सस्य समूह पप्रतज किमूदावनः सर्वता कपाताचः गुप्ता मापि नाज ह्युता नागु
 गि सर्वकृताजं सिनमस्तुत्वा ॥ नमिगु बुद्धा रुममोता उषीष चूणमतिपुष्प उच्चु अिय सामान्य सर्वता कस्यादर्शनं
 नह विष्णुगि ॥ उ गु वषगुः दुष्प न्य चीनाजः ॥ राजना याना बुद्ध दना चीन सकजदया ची कला कपावयां नमस्कायया
 नः गुप्ता गं मागायागं पिता ववायागं जह दारु किजा धर्म धका पिपिगं नमस्कायया नाज नमिगु रूपाजः उर्द
 मगु वरु सचयया नागु पुष्प गिलस ॥ उषीष चूणमति दयाजल विशसनं अगि उच्च अियरूपा सकनश कयादर्शनं
 नमना के ॥ उष्टिरुजः अगि हाकू काल वरुः च के नला कस्या कूलिर सस्याजः के अ संपूर्ण ॥ उगत्तु एतद्रू नद अकू
 अल पूष्प पुता वं उपाषग नास बुभा रुम ॥ गुब्दीर्घ नत्व गुहा एकि पुता वस्य दग्ध अल च्छापिग ॥ गिनत स्व अय
 नग स्वापय सगु नला वग सिस्तुता संपूर्णः हिसाग र्वनप पिगज कय नात्मा मूदिता एव ह विष्णुगि ॥ उ गु वषगुः धूपि
 यरु नं पूष्प रूपा दग्ध अयया गुप्ता पुता वनं उपाष द वृगया पुता वंः उष्टा दीर्घ नत्व गुहा नयाज एकि एव

मि

या नागुपूने दग्धकृष्णवर्णनागो यत्नया सत्रवर्णना कनपिनिगमपुत्रवमगस्थस्रदगयाः मनचककाः हिसा गात्रता ॥
कायमायः के वरु के वृत्तात्मा हयागो उदिगाता वयानागो चो न्यमाय ॥ अष्टागसंयुक्तवर्तुजाग समुचय ॥ पुगत्पुत्रपुत्रावन
जन्मजन्माक सर्वपापद्वय सर्वशुभलक्षणवजकायनिर्वानपदश्रु ॥ उगुववगुः च्यागाया अंगसंरुकरुयाः अष्टमिवर्तु
दनागुपूने धूगुपूने या पुत्रावन जन्मजन्मागवसे संपूर्णा पापकृन्नागो हिगुवर्तुनैरुर्करुया वजकाय अत्रिप्ररुयाः
निर्वानपदनागः उगो ॥ दिद्यनद्व ॥ संज्ञा सि ॥ आमद लुकथिरुको धाजन्मायानानः बुभ्रवाजी मरुग ॥ चतुर्वर्ग विहा
जाधने काय वा के चिह्नश्रुधय आचात्रनियमनिष्ठा धात्रिगेन बुभ्रवाजि ॥ गग ॥ मृनिष्ठतस्य वचनश्रुतादीघनत्व ॥
स्य पुसत्रचिह्नरुव ॥ अरुकेर्ग वरुषरुसाहसंददुष्टधिपयिगेज ॥ उगुववगुः चतुर्वर्ग विहाज धवजपं सत्रिप्रव
चनचिह्नश्रुधनयानागो आचात्रया भमनिष्ठा यानागो धययानाः हिदुरुयीगो ॥ उगुववगुः एगवानयागु वचनज
नागो दिद्यनद्व ॥ संज्ञा सिन ॥ पुसत्रचिह्नरुयागोः कृतसचिमिस तं तं जायकागो चो नागो नाहागेगो नाचीना
गु कथिरुमिस गात्रगागो ॥ ध्वददु के धिने चूपाय ॥ के वरु रुक्मीगारुको रुया चो न ॥ पुगत्पुकात्रपयिचि

किं न कुतः लिख्यते न विन्द्यते संवादयत ॥ हे संवृद्ध एगवन्न जगत्स्वामि अथ यत्पजीवताममः नवशु
 भ्रुभ्रनं ॥ वाधिमलुपनसपूर्वगुणत्वस्य भवन्ममः स्वार्थपमार्थसिद्धिकावर्तः वाधिल्लनप्राप्यन पापपूज्यन्
 मोदनायाया स्तगुरुकृत धावनसमावय ॥ ७ गुववगु थगुपुकारं मेननेचिह्ननायानाभः नास्तगस्तगजप्रपाभ एग
 वानयागः पात्रिसलोकपूयाविनियोगादिर्घनंत्व ॥ हे एगवन जगन्नाथ स्वामिगुरुधायका धनिनिस्थजिव
 दगलजिगुरुकृत धावनयाग भवनया यरुव वाधिमलुपेसहाविहासमध्यतप्रगुणत्वेयाभवनभननाजिः
 धयागुयायकोजलसः वाधिल्लननायनिर्मिर्गिन पापदेभनायागाभंभयावदुनेसंरुगनधाययानिर्मि
 र्गिनेकगपिनिग वृत्तचत्रपयनेना ॥ हे सर्वहृजापन्न ॥ हेगुगुभवनभभ ॥ जिधकात्मनकेमातः निश्चयनं बुद्ध
 यागवययायरुता ॥ प्रातिहिंसापयसाहवन्नागचतु बुद्धविहायः कृदुपमादाविकातरुनगधनूथपनः वल्लभ
 कातधायनपयिगजसगीनरुपवायउवभयनादिययिगज ॥ ७ गुववगुः संपूर्णप्रातिजनपिनहिंसायायगु
 कगपिनिगः हेअयायगुमयास्यः चतु बुद्धविहायसधययासाः वचनेगावर्तः अथेवसलजनयायगुः अंभगुः

नस्वागुनेहपनयागुःमिआषासगनंपून्धगुनेमावगागःकेवल्यविहायःम्यहायगुःम्याषूनरुयगुःमागासदन्यगुःधवा
कंचगे॥केवलासूक्राहमिबुलुधायिगेःहृगवज्जगच्छासा॥हृगवन्सर्वरुनाथ॥गुगवविधिकथगेममःकस्मिदि
अचयक्रानिउपवायसमस्तममेनसेवादये॥उगेवचनगुगुगो॥हृगवानूवाच॥केवल्यसूक्राहमिबुलुधयेयायःहृ
गुगुहस्वामिःदयाचोकेसर्वरुनार्थधायकाविष्ककप्रचयधायंथूकेयाविधिविधानसकगावजिगकन्यमातवाध
धायगुःगुगुनूदिनचययायगुरुवःउपायगथचूचूतवःदयाचोकेजिगकनाविष्कयमायथधधकधगुवचनठ
नाहृगवानूवाचदयकेल॥साधुगुगुमहाहागःउकागुसंजुफःगावदादोस्त्रानध्यानसमापन्नाःगुविशितचसंपूर्ण
सामनावांकायपिपूवयगु॥पुगिदिनेजधःअथवाःगुक्राहम्याकियाकर्मबृहपतुवगुगुमहा॥उगुववगुःहृमहा
हागःठ॥दिर्घनटव॥उकागुचिरुयानासंजुस्तमागुःज्ञायांहरणीर्थसमस्तानयोनाजपध्यानपूजाएवयायःका
यवाकचिरुहृवयानागुधमगुमनावांकायपिपूवयायमाय॥द्विथंथगुदिनअथवासूक्रपतुयाअहमिबूद्र

क्रिया कर्म यायः कुषू पञ्ज याय सु महा उ ह म ॥ अह मि पु मि दि न पूर् ति म थ वा पु मि प दा ह मि अ ह दि ने क्रि या क र्म
 समा च य ॥ च पु न ॥ य थ स कि नू सा य न गि य त्त्र अ य न ॥ उ ग व ष ण ॥ अ ह मि षू दू नि स्थः पु नि षू दू ग क षू ह न ॥ पु मि प दा षू दू
 नि स्थः अ ह मि षू दू ग क षू क्रि या क र्म वु र्द द थ म हा उ ह म ॥ ह न ॥ य थ स ग ति अ नू सा य ना न ॥ गि य त्त्र या अ य न अ न्य ॥
 ग ग ॥ वि हा य वा गि य त्त्र स्का भ वा ॥ म थ वा गी र्थ स्का भः न दि स्का भः सू उ ग म नु या वा गु ड ग हे वा उ ग र्म र्व स्का भ वु र्द जा ग सु
 मा च य ॥ ना व दा दो गी र्थ ज त्त्र ग व त्त्र ॥ मू णि का ले प्र य ॥ सू ग ध ग ल सू ग ध पू ष्य जा जा उ ग स म र्प य ॥ १७ उ ग व ष ण ॥ वि हा य
 ह रु यः दे व या क्रि अ न्य ह रु य ॥ ह न ॥ गि र्थ स्का भ ह तः दू सि ह रु यः सू र स्का भ ह रु यः मं लु प ह रु यः उ ह रु यः धू पिः सै र्व
 स्का भः उ ह म ग व रु या य ॥ प्रा पां गि र्थ ज नाः य व न ग व ल नः चानः व ॥ सू ग ध ज त न स स्ना न या यः स्ना न अ ह ग ता य य
 हा वा वि य ॥ न व ज त्त्रा दि सू व र्ण दि अ ह धा गुः म थ वा पं के पंगः म थ वा पू ष्य चूर्णः धा न्या दिः पा षा ल चूर्णः सा म ना वां च्छा
 पू यि ग न ॥ गी अ मा घ पा ज म हा म लु त्ति ष्य ग ॥ ह न ॥ न व ज त्त्रा चूर्ण रु यः सू व र्ण चूर्ण रु यः अ ह धा गु चै ग याः ह न ॥ पंच ज
 ग रु यः ह न ॥ पू र्व चूर्ण रु यः धा न चूर्ण रु यः धा ना स रु यः धा म ना वां च्छा पू य या ना ॥ दे व ग न्म आ दि स हि ग या नाः गी

महामन्त्रसदयके रूपः ॥ पुनरुविधिसंपूर्णनश्रीआभासपाञ्चदिसर्वदेवदेवतावाहनः यथाविधिपूजयत् ॥ गाव
दाक्षोपेचगधसूगधजलस्नानलेपयत् ॥ धूगुविधिसंपूर्णनश्रीआभासपाञ्चदिसर्वदेवदेवता
आवाहनयाना यथाविधिथं पूजायाय ॥ प्राप्तां पंचगधेन स्नानयाय ॥ पंचैवर्णजह्णपविगस्त्रिगपूष्यनानापूष्यमाला
अभकपत्रमालाः कनकमाला मेहादिपदीपमाला माकाशदीपः ॥ जगत्पुकात्रयाजजकाः भगुगुस्नानः स्नानमात्राः अं
भकपत्रमात्राः सूवर्णमात्राः महादिपमात्रा चाकमगः आकाशमगः अयकावियः ॥ चपूना ॥ पूष्यंधूपदीपदलमूला
दिनानापुकात्रयापंचामृगादिः पायसश्रीवः अंभकपकानि नैवद्यसमर्पयत् ॥ गगपयन्तुपंचैमिषनलक्ष्म
यगत्पुकात्रपूजाकियाकर्मविधिसंपूर्णः अक्षगपुत्रामदन्ववगपुदह्निजयनागसमाचयत् ॥ हनपूष्यंधूपदी
पद्वयमूत्रेच्छायः पंचामृगनंश्रीवनेः मधिनं चयः ॥ ७७ वषट्प्रीपट् हनपंचामृगनंधयागुनयमगः ॥ धूगुपु
कात्रपूजाकियायानासंपूर्णधूनः हनं अक्षगपुत्रामयानाजपनागुसकत्रयानाया ॥ पूनर्वाद अक्षगपुत्रामकृ
मां ऊर्हिवधगुपापदेअनापूष्यनूमादना ॥ गगः हजगत्स्वामिजानं अजानः अपिलं हगियः पात्रागिपातः ॥

अदत्तादानः काममिच्छा चानुगत्यापन्ना चयत ॥ हनः आहंगपुत्रा मयानाभः विमियायाः पापदंशनायायः पूत्यन्
 भादनायायः उगुवषगुः हस्वामिअभाद्यपाभ्राक्कभ्राजः जिनं कुमसियाः जिगुसत्रियसः क्षातापापः ॥ मविकेका
 गुः कामपापगुः धूयिनाभयायमात्र ॥ यत्रकुमभनकर्मयत ॥ केवलपूत्यन्नुभादनकुयासभनसमाचयत ॥ उग
 त्रियाकर्मसमाफेनगित्तस्यभवन ॥ मभनअस्मिदिने ॥ ब्रह्मधर्मसद्यः पत्रितजपयमूयवाभकर्मचात्रिग ॥
 त्रियगसयायमभूतः जिनं कर्मयाय ॥ केवल्यः पूत्यन्नुभादनाक्रियाजिनं यायरुव ॥ धूगुक्रियाकर्मसमा
 फयायधूनकाभः गित्तयाभवनअहजिनः ॥ धनिस्यः ब्रधनतः धर्मतः सद्यतः भावताभः भवगुउपा
 भकर्मचूयायमभू ॥ गवरुमियनिर्वानेयदसूपसंने ॥ गगः वाधिसिद्धात्पादः अतिगअनागगपुण्यत्यन्नग
 धगगः दानपात्रमितादिः दभपात्रमितापात्रयत ॥ वाधिसानसमावयनः गधगगपदव्यनजगत्ससावपात्र
 यननिर्वानेयदं ॥ उगुवषगुः कृतपात्रः स्वमस्यनं निर्वानरुतविश्रुतः कृतपात्र ॥ उगुवषगुः वाधिसिद्ध
 उत्पुगियाय ॥ अगीगअनागगपुण्यत्यन्नगधगगपनिसेने ॥ दानपात्रमिताआदि ॥ दभपात्रमिताआदि

मिः उ पा सं ची ना या पू न्ध रु ज ग थि गु वा य द पी ज म् ध साः थू गु पू न्ध या पु ला वं १०००
 दे वः आ र ०० शु ध य का ज न म रु गु ४॥ ग न ४ ज ह मा स्य सि गे प रु सू का ह मि दि न बु रु वा ज
 न दान रु तं य ए गु ॥ ह नं ज ह मा स या सू का ह मि उ पा सं ची ना या पू न्ध रु ज ग थि गु वा य
 ना या पु ला वं १२०० सा दान या ना गु या रु त द गु रु ज ॥ आ षा ठ गु का ह मि दि नं अ ह
 व न्ध ह सह सा न्ध सू व रू दान रु तं ॥ ह नः आ षा ठ मा स या सू का ह मि दि नं उ पा थ
 थि गु वा य द यि वा ध सा थू गु पू न्ध या पु ला वं ८००० ह व रू दान या ना गु या रु त द गु वा य ॥
 जा र स मा च यः उ ग त्पू न्ध पु ला व न गि न रु प व नू य ना दान रु तं ॥ अ व न मा स या सू का ह
 ना या पू न्ध रु ज ग थि गु वा य द यि वा ध सा थू गु पू न्ध या पु ला वं ३००००० अ ह दान या ना
 द गु वा य द यि वा ध सा थू गु पू न्ध या पु ला वं ३००००० अ ह दान या ना
 द गु वा य द यि वा ध सा थू गु पू न्ध या पु ला वं ३००००० अ ह दान या ना

रवन वासया ॥ एतदपदमासया सूत्राह मि उ पासे ची नाया रुतंग पिगु नाय द यिना धि साः थूगु पू ल्ध
न जं ६००० १००० तु विगा र व न र न म रु या वा स या य द यी यी यी ॥ आ भि न मा स स्य वृ ग चु ग म नि
स ह सुा लं दान रु वं ॥ आ भि न मा स या सू का ह मि वृ रु उ पा स ना ची ना य रु तंग पिगु ना य
ध या पु ला वं १००० रु न नी त दान या ना या रु व द गु रु ल ॥ रु नं । का र्हि क मा स स्य वृ रु
नू न्या नू लं दान स रु र्म गु न वां चि गे न स ह सु प न ना ग दान रु तंग पिगु ना य द यिना धि सा थूगु पू ल्ध या पु ला वं
वृ रु उ पा स ना यी ना गु पू ल्ध या रु तंग पिगु ना य द यिना धि सा थूगु पू ल्ध या पु ला वं ३१
ना या रु तंग पिगु ना य द यिना धि सा थूगु पू ल्ध या पु ला वं ॥ मा र्ग न्नि भि न मा स्य गु का ह मि दि नं वृ रु क र्म ना ग पू न्यः रा स ह सु दा
न मा स या सू का ह मि दि नं उ पा स ची ना या रु तंग पिगु ना य द यिना धि सा थूगु पू ल्ध
ना ना या रु व द गु रु व ॥ धी र मा स्य मि गे प रु वृ रु जा र स मा व र ग । व ह्नि व व स रु सा
२ भू र्ग २ पू र्ग २ स्ती प प यि ना य क द्मा नि १ ३ गे स क व ल प यि पू र्ग १ च व व